A Daily News Magazine

भोपाल

शुक्रवार, 15 नवंबर, 2024

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-76 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

दिल्ली की हवा लाहौर और मुल्तान जैसी खतरनाक न हो जाए!

हरजिंदर

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की लगातार दमघोटूं होती हवा के बीच केंद्र सरकार ने प्रदूषण रोकने के लिए एक पुराना दांव चला है। पिछले सप्ताह उसने पराली जलाने पर लगाया जाने वाला जुर्माना दुगना कर दिया है। पहले यह जुर्माना ढाई से 15 हजार रुपये तक था जिसे बढ़ाकर अब पराली जलाने वाले किसानों पर पांच से 30 हजार रुपये तक कर दिया गया है। वैसे यह कदम भी तब उठाया गया जब सुप्रीम कोर्ट दिल्ली की खराब होती हवा को लेकर सरकार के प्रति सख्ती दिखाई।

वैसे इस कदम का स्वागत किया जा सकता था अगर इसका जमीन पर वाकई कोई असर हो। तीन सप्ताह पहले ही सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार की इस बात के लिए खिंचाई की थी कि जो क़ानून है उसे ठीक से लागू नहीं किया जा रहा है। हालांकि तब अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ने अदालत को बताया था कि पंजाब में पराली जलाए जाने को लेकर 1000 से ज्यादा मामले दर्ज किए गए हैं। इसे लेकर भी राजनीति ही चल रही है।

यह भी माना जाता है कि कानून बनाना और जुर्माना बढ़ाना जितना आसान है सिर्फ कानून के जरिये पराली को जलने से रोकना उतना ही कठिन है। कई मामलों में यह भी देखा गया है कि अगर कहीं कोई एक किसान पराली जला रहा होता है और प्रशासन की टीम वहां जुर्माने के लिए पहुँच जाती है तो उस टीम का विरोध करने के लिए पूरा गांव खड़ा हो जाता है।

पराली जलाए जाने से रोकने के अभी तक बहुत से कानून बन चुके हैं। पराली के प्रबंधन के लिए केंद्र सरकार बकायदा एक राष्ट्रीय नीति बना चुकी है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब में पराली जलाए जाने पर पहले ही पाबंदी लगा चुका है। भारतीय न्याय संहिता के तहत भी यह एक अपराध है और वायु व प्रदूषण नियंत्रण कानून भी इसे अपराध की श्रेणी में ही रखता है। साल दर साल इसके लिए चालान होने की ख़बरें भी आती रहती हैं लेकिन फिर भी धान की फ़सल कट जाने के बाद खेतों में बचे डंठलों और जड़ों में वहीं पर आग लगाने का सिलसिला थम नहीं रहा।

एक अनुमान है कि देश में हर साल 50 करोड़ टन पराली पैदा होती है जिसमें 34 फीसदी धान की पराली होती है, 22 फीसदी गेहूं की और बाकी अन्य फसलों की। हर बार हमें यह बताया जाता है कि इस पराली का अच्छा उपयोग हो सकता है मसलन इसे ईंधन में बदला जा सकता है। लेकिन न तो इसकी कोई बड़ी परियोजना अभी तक बनी है और न ही किसानों से इसे खरीदने का कोई उपक्रम ही विकसित हुआ है। बस बातें ही होती रही हैं।

पराली को लेकर पूरे उत्तर भारत में चल रही हायतौबा के बीच सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट ने जो आंकड़े दिए हैं वे कुछ और ही कहानी कहते हैं। उसके अनुसार दिल्ली के प्रदूषण में पराली का योगदान महज आठ फीसदी ही है। बाकी इसके पीछे दूसरे कारक हैं जिनमें से ज्यादातर स्थानीय हैं।

लेकिन पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में जलने वाली पराली नेताओं और नौकरशाहों को यह सुविधा दे देती है कि वे मूल समस्या से लोगों का ध्यान हटा कर आरोपों को कहीं और मोड़ दें और यही हो रहा है।

इस समय जहां दिल्ली में वायु गुणवत्ता 400 के आस-पास के ख़तरनाक स्तर पर है, वहीं यह ख़बर सिहरन पैदा कर देती है कि कुछ दिन पहले पाकिस्तान के लाहौर में यह आंकड़ा 1900 के अकल्पनीय स्तर पर पहुँच गया था। लेकिन तब भी लाहौर प्रदूषण के मामले में अव्वल नहीं था। प्रदूषण के मामले में बाजी पाकिस्तान के ही एक दूसरे शहर मुल्तान के हाथ लगी जहां प्रदूषण का यह सूचकांक 2000 पार कर गया।

इतने प्रदूषण के बाद स्कूल बंद करने और लॉक डाउन लगाने के अलावा पाकिस्तान ने क्या किया? वही किया जो भारत करता है। उसने भी पराली जलाने वाले किसानों पर ही आरोप लगाया। इस मामले में पाकिस्तान के पास एक सुविधा और है, वह अपने किसानों के अलावा भारत के किसानों पर भी आरोप लगा सकता है। लेकिन इसके आगे बढ़कर कुछ लोगों ने तो सीधे भारत पर ही आरोप मढ़ डाले।

सीमाएं अलग-अलग भले ही हो गई हैं लेकिन भारत और पाकिस्तान एक ही पर्यावरण के हिस्से हैं। इस लिहाज से उनका प्रदूषण कोई दूर की चीज नहीं है। जो हाल आज लाहौर और मुल्तान का है वह कल हमारा भी हो सकता है। खासकर तब जब हम जुर्माना बढ़ाने और किसानों के सर सारा दोष मढ़ने के अलावा समस्या से लड़ने के लिए कोई ठोस काम नहीं कर रहे।

अभी जो हमारे पास व्यवस्था है उससे यह उम्मीद तो नहीं बनती कि किसानों के प्रति उसमें हमदर्दी का कोई भाव दिखाई देगा। लेकिन जब नीतियाँ बनाने वाले खुद ही जहरीली हवा से घिरे हों तो उनसे समस्या को लेकर गंभीर होने की उम्मीद तो की ही जा सकती है।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

संभाजी महाराज के हत्यारे को मसीहा मानते हैं कुछ लोग

मुंबई (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के प्रचार में विपक्ष पर जोरदार हमला बोला। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और सहयोगी दल अनुच्छेद 370 की बहाली चाहते हैं और कश्मीर के लिए अलग संविधान की योजना बना रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमने तो औरंगाबाद का नाम बदलकर छत्रपति संभाजीनगर किया और बालासाहेब ठाकरे की इच्छा पूरी की। पीएम मोदी ने कहा कि हमने हिंदुत्व की राजनीति से समझौता नहीं किया, जबकि कुछ लोगों ने अपना रास्ता ही बदल लिया है। उन्होंने कहा कि भाजपा के नेतृत्व वाली महायुति सरकार के गठन के बाद महाराष्ट्र में सबसे अधिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश हुआ। यही नहीं एक और तीखा वार करते हुए उन्होंने कहा कि कुछ लोग संभाजी महाराज के हत्यारे में अपना मसीहा देखते हैं। बता दें कि छत्रपति शिवाजी के बेटे संभाजी महाराज थे, जिनकी हत्या का आदेश औरंगजेब ने दिया था। यह भी एक कारण है कि महाराष्ट्र में शिवाजी बनाम औरंगजेब की राजनीति होती रही है। महाराष्ट्र में यह एक संवेदनशील विषय रहा है। इसके अलावा औरंगाबाद का क्षेत्र एक दौर में हैदराबाद स्टेट के तहत आता था, जिस पर निजाम का शासन था। ऐसे में यहां की राजनीति में ध्रुवीकरण की भी संभावनाएं रहती हैं। इस क्षेत्र में मुस्लिमों की बड़ी आबादी रहती है। छत्रपति संभाजी महाराज छत्रपति शिवाजी महाराज के उत्तराधिकारी थे। उस समय मराठों का सबसे प्रबल शत्रु मुगल शासक औरंगजेब था। बीजापुर और गोलकुण्डा का शासन हिंदुस्तान से समाप्त करने में उनकी प्रमुख भूमिका रही। संभाजी राजे अपनी शौर्यता के लिये प्रसिद्ध थे।

● महाराष्ट्र चुनाव में पीएम मोदी ने फिर चला औरंगजेब कार्ड

पीएम मोदी आज जनजातीय गौरव दिवस समारोह में होंगे वर्चुअली शामिल

मध्यप्रदेश के 2 जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालयों का करेंगे लोकार्पण

भोपाल। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर शहडोल में आयोजित राष्ट्रीय जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम में वर्चुअली शामिल होंगे। प्रधानमंत्री श्री मोदी छिंदवाड़ा के श्री बादल भोई जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालय एवं जबलपुर के राजा शंकर शाह और रघुनाथ शाह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालय, राष्ट्र को समर्पित करेंगे। मध्यप्रदेश के राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल, जनजाति कार्य मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह सहित जन-प्रतिनिधि और बड़ी संख्या में जनजातीय समाज के लोग शामिल होंगे। राज्यपाल श्री पटेल और मुख्यमंत्री डॉ.यादव द्वारा शहडोल में जनजातीय गौरव दिवस शहडोल में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में विकास की अनेक सौगात दी जाएगी। इस दौरान 229.66 करोड़ रूपये की लागत के 76 विभिन्न विकास कार्यों का भूमि-पूजन और लोकार्पण किया जायेगा। समारोह में लोक कलाकारों द्वारा पारंपरिक लोक नृत्य गुदुम्ब, शैला, करमा, रीना की प्रस्तुतियां दी जाएगी। साथ ही समारोह स्थल पर विभिन्न विभागों की विकास प्रदर्शनी भी लगाई जायेगी।

सुप्रभात

मैं अपने सपनों को
सच का धरातल
देना चाहता हूँ

सब कुछ जहां
परायापन है
वहां
मैं अपनों से
प्रगाढ़ स्नेह
करना चाहता हूँ

इस छलकपट की
दुनिया में
मैं प्रेम का घर
बनाना चाहता हूँ

मैं अपनी साँसों में
सबकी साँसें
महकाना चाहता हूँ

मैं अपने जीवन को
जीवंत बनाना
चाहता हूँ।

– दुर्गाप्रसाद झाला

छात्रों के आगे झुका यूपी पीएससी, मान ली सभी शर्त

अब एक दिन और एक ही शिफ्ट में होगी पीसीएस की परीक्षा

प्रयागराज (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में छात्रों के प्रदर्शन के आगे यूपीपीएससी को झुकना पड़ा है। जानकारी के मुताबिक, यूपीपीएससी ने अपना फैसला वापस ले लिया है। ऐसे में यूपीपीएससी की ओर से होने वाली परीक्षा एक दिन और एक ही शिफ्ट में होगी। वहीं, आरओ-एआरओ की परीक्षा के लिए कमिटी बनाई गई है। बड़ी संख्या में छात्र इसको लेकर प्रयागराज में प्रदर्शन कर रहे थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की पहल पर यूपीपीएससी ने यह बड़ा निर्णय लिया है। खबर के मुताबिक, प्रयागराज में छात्रों की मांग का सीएम योगी आदित्यनाथ ने संज्ञान लिया और आयोग को छात्रों के साथ संवाद कर और समन्वय बनाकर आवश्यक निर्णय लेने को कहा था। इसके बाद अपना फैसला बदलते हुए पीसीएस प्रारंभिक परीक्षा एक दिन में कराए जाने का निर्णय लिया है।

● छात्रों के प्रदर्शन के बाद यूपीपीएससी ने वापस लिया फैसला

जेएमएम-कांग्रेस झारखंड को एटीएम बनाना चाहती हैं

गिरिडीह (एजेंसी)। झारखंड विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण के प्रचार को लेकर गुरुवार को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने गिरिडीह में जनसभा की। इसमें उन्होंने एक बार फिर धारा 370, बांग्लादेशी घुसपैठ और भ्रष्टाचार को लेकर कांग्रेस-झामुमो सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा- हेमंत सरकार का समय समाप्त हो गया है। सुन लो घुसपैठियों अब तुम्हारा भी समय खत्म हो गया है। एक-एक को चून कर बाहर करेंगे। कायदे से नहीं मानेंगे तो उल्टा लटकाकर सीधा करेंगे। शाह ने कहा- सोनिया गांधी ने राहुल गांधी को कई बार लॉच किया, हर बार फेल हो गई। राहुल बाबा के प्लेन को 20 बार उड़ाया गया, लैंड नहीं कर पा रहा है। 21वीं बार भी बाबाधाम के एयरपोर्ट पर क्रैश हो जाएगा। उन्होंने कहा- कश्मीर भारत का है। इसे कोई नहीं ले सकता। ऑर्टिकल 370 अब नहीं हट सकता।

आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर का उत्सव है 'गीता उत्सव'

मुख्यमंत्री डॉ. यादव बोले-श्रीमद् भगवत गीता सिर्फ धार्मिक ग्रंथ नहीं, जीवन जीने का मार्गदर्शक ग्रंथ भी है

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने श्रीमद् भगवत गीता पर केन्द्रित गीता उत्सव के अभियान पर प्रदेशवासियों को बधाई देते हुए कहा कि इस उत्सव का महत्व इसलिए और भी बढ़ जाता है क्योंकि देश में पहली बार गीता पर आधारित शिक्षा प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि श्रीमद् भगवत गीता केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन जीने की महान कला सिखाने वाला मार्गदर्शक ग्रंथ भी है। उन्होंने कहा कि गीता महोत्सव हमारी महान सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर का उत्सव है। यह एक अद्भुत अवसर है जिसके माध्यम से हम श्रीमद् भगवत गीता के अमूल्य ज्ञान और प्रेरणा को अपने जीवन में आत्मसात कर सकते है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नवंबर के अंतिम सप्ताह में आयोजित श्रीमद् भगवत गीता के जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। स्कूल शिक्षा एवं इस्कॉन के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित इस प्रतियोगिता के माध्यम से गीता की अमूल्य शिक्षा और जीवन मूल्यों को गहराई से समझने और उन्हें आत्मसात करने का अद्भुत अवसर मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आमजन को संबोधित करते हुए कहा कि यह प्रतियोगिता न केवल लोगों के बौद्धिक विकास में सहायक होगी बल्कि उनमें धैर्य, आत्म नियंत्रण और सही निर्णय लेने की क्षमता का भी विकास करेगी। गीता उत्सव के माध्यम से लोगों को गीता के गहन संदेशों को आत्मसात करने और अपने जीवन को ऊर्जावान और सही दिशा प्रदान करने में मदद मिलेगी।

भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को भव्य स्वरूप में मनाया जाए

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मनुष्य के रूप में जीते जी जिन्हें भगवान का दर्जा मिला, ऐसे भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भगवान बिरसा मुंडा की जयंती प्रति वर्ष मनाने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि अतीत में इतिहास के पन्नों पर स्वर्ण बिहार, झारखंड की धरती से उन्होंने अंग्रेजों का प्रबल प्रतिरोध स्थापित किया, जहां से आदिवासी अंचल में दो स्वतंत्रता आंदोलन की भूमिका बनी।

राजस्थान में थप्पड़कांड के आरोपी नरेश मीणा गिरफ्तार

● टोंक में भारी आगजनी-पथराव, पुलिस की गाड़ियां रोकीं ● सुरक्षाबलों ने आंसू गैस के गोले दागे, समर्थकों को खदेड़ा

टोंक (एजेंसी)। राजस्थान के देवली-उनियारा में नरेश मीणा की गिरफ्तारी के बाद फिर बवाल शुरू हो गया है। मीणा के समर्थकों ने पुलिस की गाड़ियों को रोकने की कोशिश में चक्का-जाम कर दिया। देवली-उनियारा के समरावता गांव की सड़क पर भी टायर जलाए गए हैं। लोगों को खदेड़ने के लिए पुलिस ने आंसू गैस के गोले दागे हैं। उपद्रवियों ने भी पुलिस पर हल्का पथराव किया है। नरेश मीणा के समर्थकों ने टोंक से सवाई माधोपुर जाने वाले नेशनल हाईवे-116 पर भी अलीगढ़ कस्बे के पास जाम लगा दिया है। कृषि मंत्री किरोड़ीलाल मीणा नरेश मीणा के समर्थकों से बात करने पहुंचे। इससे पहले करीब 12 बजे देवली-उनियारा विधानसभा के समरावता (टोंक) गांव से एसडीएम को थप्पड़ मारने वाले नरेश मीणा को गिरफ्तार किया गया था। दरअसल, समरावता (टोंक) गांव ने उपचुनाव में वोटिंग का बहिष्कार किया था। निर्दलीय प्रत्याशी नरेश मीणा भी ग्रामीणों के साथ धरने पर थे। इसी दौरान नरेश मीणा ने अधिकारियों पर जबरन मतदान करवाने का आरोप लगाया।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 15 नवंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

पीएम मोदी को अब डोमिनिका देगा सर्वोच्च सम्मान

रोसेउ (एजेंसी)। कैरेबियाई देश डोमिनिका ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपना सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार- डोमिनिका अवॉर्ड ऑफ ऑनर देने की घोषणा की है। भारतीय प्रधानमंत्री को कोविड-19 महामारी के दौरान डोमिनिका की मदद करने के लिए यह पुरस्कार दिया जा रहा है। भारत ने फरवरी 2021 में डोमिनिका को एस्ट्राजेनेका कोविड-19 वैक्सीन के 70 हजार डोज भेजे थे। यह वैक्सीन डोमिनिका और उसके पड़ोसी अन्य कैरेबियाई देशों के काम आई थी। भारतीय प्रधानमंत्री के डोमिनिका के हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर में सहयोग के लिए यह अवॉर्ड दिया जा रहा है। डोमिनिका के राष्ट्रपति सिलवेनी बर्टन प्रधानमंत्री मोदी को गुयाना में भारत-कैरिकॉम समिट के दौरान यह पुरस्कार देंगे। मोदी 19 से 21 नवंबर के बीच गुयाना के दौरे पर रहेंगे।

'राहुल बाबा की मोहब्बत की दुकान में मिलता है बंटवारे का सामान

मुंबई (एजेंसी)। बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कांग्रेस पार्टी पर जबरदस्त प्रहार किया है। कर्नाटक सरकार के मंत्री द्वारा कुमारस्वामी पर दिए गए बयान का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि राहुल गांधी की मोहब्बत की दुकान में बंटवारे का सामान मिलता है। ऐसे लोगों को जवाब देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो वाली विचारधारा वाले लोग भारत में मौजूद हैं लेकिन हमें देश को मजबूत रखना है। एक स्वस्थ देश के लिए समय-समय पर अच्छी एंटी बायोटिक की जरूरत है। उन्होंने मुंबई में आयोजित इस कार्यक्रम में मौजूद लोगों के संबोधित करते हुए कहा कि 20 नवंबर को आपको ऐसी ही एंटी बायोटिक देनी है।

कोई हमें छेड़े तो फिर छोड़ेंगे नहीं: योगी

धनबाद (एजेंसी)। यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ गुरुवार को निरसा (धनबाद) पहुंचे। यहां आयोजित चुनावी सभा में योगी आदित्यनाथ ने कहा- अगर बंटेंगे तो कटेंगे। हमें तो एक रहना है। एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे। इसके लिए भाजपा को लेकर आइए। यहां

भ्रष्टाचारियों की कोई जगह नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा- अटल बिहारी बाजपेई ने झारखंड का निर्माण किया था। उनका सपना था कि विकसित झारखंड बनाएंगे। झारखंड के नागरिकों को विकास की धारा से जोड़ेंगे। लेकिन पिछले 20 सालों में इसे बद से बदतर कर दिया गया। एक तरह नया भारत बन रहा है तो दूसरी ओर झारखंड पिछड़ रहा है।

एंटी चीटिंग बिल ला रही ओडिशा की बीजेपी सरकार

नहीं मिलेगी जमानत, 5 साल की सजा और 10 लाख के जुर्माने का प्रावधान

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा की बीजेपी सरकार परीक्षाओं में नकल रोकने के लिए बेहद सख्त कदम उठाने जा रही है। रिपोर्ट के अनुसार, विभिन्न पब्लिक एग्जाम में अनियमितताओं के आरोपों के बीच ओडिशा सरकार नया एंटी चीटिंग बिल लेकर आ रही है। इस बिल में एग्जाम में चीटिंग को संज्ञेय, गैर-जमानती और गैर-समझौता योग्य अपराध बनाना, पांच साल तक की कैद और 10 लाख रुपये तक के जुर्माने के कड़े प्रावधान हैं। ओडिशा पब्लिक एग्जाम (प्रिवेंशन ऑफ

अनफेयर मीन्स) एक्ट, 2024 नाम वाला यह ड्राफ्ट नवंबर 26 से शुरू हो रहे राज्य विधानसभा के अगले सत्र में पास होने की उम्मीद है। चीफ सेक्रेटरी मनोज आहूजा के अनुसार, इस बिल का मकसद विभिन्न प्रकार के गलत साधनों जैसे गलत पहचान, चीटिंग, एग्जाम प्रक्रिया को बाधित करना, निर्धारित समय से पहले एग्जाम से संबंधित जानकारी का लीक होना, एग्जाम हॉल में अनधिकृत एंट्री आदि और पब्लिक एग्जाम की इंटीग्रिटी को बनाए रखना है। कैबिनेट मीटिंग के बाद मनोज आहूजा ने कहा कि अनुचित साधनों और अपराधों का सहारा लेने वाले किसी भी व्यक्ति या व्यक्तियों को तीन से पांच साल तक के कारावास और दस लाख रुपये तक का जुर्माना लगाया जाएगा।

अब शरद पवार ने अजित को नए दांव से चौंकाया

महाराष्ट्र की तीन सीटों पर 3 नेता तोड़ बढ़ाई टेंशन

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव अब लगभग आखिरी दौर में है। प्रचार में 5 दिन का ही वक्त बचा है और उससे पहले शरद पवार ने बड़ा मास्टरस्ट्रोक खेल दिया है। उन्होंने पुणे की दो सीटों पर अजित पवार के सहयोगियों को शामिल कर लिया है तो वहीं एक सीट पर भाजपा के बड़े नेता को अपने पाले में ले आए हैं। इस तरह पुणे की तीन सीटों पर शरद पवार ने दांव चल दिया है, जिन पर अजित पवार और भाजपा खुद को मजबूत मानकर चल रहे थे।

अजित पवार के साथी सुनील तटकरे के करीबी और पीएमसी बैंक के पदाधिकारी भी पार्टी में शामिल हो गए हैं। विधानसभा चुनाव के आखिरी चरण में शरद पवार पश्चिमी महाराष्ट्र पर फोकस कर रहे हैं। इस बार फोकस बैठकों, रोड शो और दूसरे नेताओं को पार्टी में लाने पर है। शरद पवार ने आज पुणे और रायगढ़ में पार्टी में कई नेताओं को एंट्री दिलाई। इससे महायुति को झटके की आशंका है। वड़गांव शेरी निर्वाचन क्षेत्र से पूर्व एनसीपी नगरसेवक रेखा टिंगरे और चंद्रकांत टिंगरे ने एनसीपी-एसपी का दामन थाम लिया है। इनके अलावा दिलीप तुपे और अनिल तुपे भी पार्टी में आए गए हैं। इन लोगों का पुणे की हड़पसर सीट पर असर माना जाता है।

भाई के बाद अब ओवैसी ने किया 15 मिनट का जिक्र

फिर गुस्ताखी होने की ऐक्टिंग की

सोलापुर (एजेंसी)। हैदराबाद के सांसद और एएमआईएमआई चीफ असदुद्दीन ओवैसी ने महाराष्ट्र के सोलापुर में बुधवार को चुनाव प्रचार के दौरान 15 मिनट का जिक्र किया। 2012 में उनके भाई अकबरुद्दीन ओवैसी ने कहा था- देश से 15 मिनट के लिए

पुलिस हटा दो तो पता चल जाएगा कौन कितना ताकतवर है। महाराष्ट्र चुनाव में ओवैसी और डिप्टी सीएम फडणवीस के बीच जुबानी जंग चल रही है। सोलापुर में पुलिस ने मंच पर ही ओवैसी को भड़काऊ भाषण देने से बचने का नोटिस थमा दिया। इस पर तंज कसते हुए ओवैसी ने फिर 15 मिनट का जिक्र किया। हालांकि, तुरंत बाद उन्होंने गुस्ताखी होने की ऐक्टिंग की। फिर कहा- वैरी सॉरी...। ओवैसी ने अपनी बात को संभाला। मोबाइल और घड़ी दिखाते हुए बोले- 9.45... मीडिया वालों घड़ी चेक कर लो तुम्हारी भी। ओवैसी ने 15 मिनट को चुनाव प्रचार के टाइम खत्म होने में 15 मिनट बाकी होने से जोड़ा।

ट्रम्प ने तुलसी गबार्ड को बनाया नेशनल इंटेलीजेंस का चीफ

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प अपनी सरकार के अहम पदों पर नियुक्तियां कर रहे हैं। ट्रम्प ने हिन्दू नेता तुलसी गबार्ड को नेशनल इंटेलिजेंस के डायरेक्टर की जिम्मेदारी दी है। उन्होंने बुधवार को बाइडेन से मुलाकात के बाद इसकी घोषणा की। तुलसी, ट्रम्प के दूसरे कार्यकाल की शुरुआत के बाद पद को संभालेंगी। वह अवरील हेन्स की जगह लेंगी। तुलसी गबार्ड (43) अमेरिका की पहली हिन्दू सांसद रही हैं। गबार्ड ने 21 साल की उम्र में हवाई से अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत की। वह 4 बार डेमोक्रेटिक पार्टी से सांसद रहीं। तुलसी पहले बाइडेन की डेमोक्रेटिक पार्टी की नेता थी। उन्होंने पिछले महीने ही रिपब्लिकन पार्टी को ज्वाइन किया है। ट्रम्प ने तुलसी के अलावा और दो लोगों को अहम जिम्मेदारी दी है। फ्लोरिडा सीनेटर मार्को रूबियो को विदेश मंत्री और मैट गेट्ज को अटॉर्नी जनरल बनाया गया है। दो साल पहले डेमोक्रेटिक पार्टी छोड़ी, कई गंभीर आरोप लगाए तुलसी एक दशक पहले लेफ्टिनेंट कर्नल के तौर पर इराक युद्ध में लड़ चुकी हैं और अमेरिकी आर्मी रिजर्विस्ट रही हैं। उन्होंने अक्टूबर 2022 में डेमोक्रेटिक पार्टी पर गंभीर आरोप लगाते हुए पार्टी छोड़ दी थी। तुलसी का कहना था कि डेमोक्रेटिक पार्टी कुछ एलीट लोगों के कंट्रोल में आ चुकी है। ये जंग की बातें करते हैं। श्वेत लोगों का विरोध करते हैं और नस्लभेदी ग्रुप में तब्दील हो रहे हैं। उन्होंने इस्लामी चरमपंथ को न रोक पाने के लिए डेमोक्रेटिक सरकार की आलोचना की थी। राजनीति छोड़ न्यूज चैनल का हिस्सा बनीं तुलसी 2016 के चुनाव में डेमोक्रेटिक पार्टी की तरफ से राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार थीं। बाद में उन्होंने हिलेरी क्लिंटन की जगह बर्नी सेंडर्स का समर्थन किया था। वह 2020 में भी राष्ट्रपति पद के लिए डेमोक्रेटिक प्राइमरी की दौड़ में शामिल रहीं। बाद में उन्होंने बाइडेन का साथ दिया। 2022 में पार्टी छोड़ने के बाद तुलसी ने फॉक्स न्यूज को ज्वाइन कर लिया था। वह वहां कई शो में को-होस्ट के तौर पर नजर आईं। तुलसी ने 2022 के चुनाव में कई रिपब्लकिन उम्मीदवारों के पक्ष में चुनाव प्रचार किया।

पिछले महीने रिपब्लिकन पार्टी में शामिल हुई थीं,कमला हैरिस को डिबेट में हराया था

देश में 8 फीसदी आदिवासी लेकिन संसाधनों में सिर्फ 1 फीसदी हिस्सेदारी

राहुल बोले- मोदी ने संविधान नहीं पढ़ा,जल-जंगल-जमीन पर पहला हक उनका

मुंबई (एजेंसी)। राहुल ने गुरुवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कभी संविधान पढ़ा नहीं है, इसलिए उन्हें लगता है कि संविधान की लाल किताब खाली है। वे महाराष्ट्र के नंदुरबार में रैली को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान संविधान की प्रति दिखाते हुए उन्होंने कहा- भाजपा को किताब का लाल रंग पसंद नहीं, लेकिन हमें इसकी परवाह नहीं कि रंग लाल है या नीला। हम इसे (संविधान) बचाने के लिए अपनी जान भी देने को तैयार हैं। दरअसल, चुनाव प्रचार के दौरान भाजपा नेताओं ने राहुल गांधी द्वारा दिखाई जाने वाली लाल किताब को शहरी नक्सलवाद से जोड़ने

की कोशिश की थी। पीएम मोदी ने भी 9 नवंबर को तंज किया था कि राहुल गांधी संविधान की जो किताब लेकर घूम रहे हैं, उसके पन्ने खाली हैं।

त्योहारी सीजन के बाद टूट गए सोना-चांदी के दाम, 14 नवंबर को 1450 रुपये सस्ता हुआ गोल्ड

इंदौर। त्योहारी सीजन खत्म होते ही सोना और चांदी के दाम में गिरावट आ रही है। घरेलू सराफा बाजार में सोने और चांदी की कीमतों में भारी गिरावट देखी जा रही है, जिसका मुख्य कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार और महंगाई के आंकड़े हैं।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में गिरावट- अंतरराष्ट्रीय बाजार में अमेरिकी डॉलर की मजबूती और बढ़े हुए बांड यील्ड के दबाव में बुलियन बाजार टूट गया है। कामेक्स पर सोने का वायदा 67 डॉलर घटकर 2542 डॉलर प्रति औंस हो गया, जबकि चांदी का वायदा 125 सेंट घटकर 39.78 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गया।

भारत में सोने और चांदी के दाम में गिरावट-

भारतीय बाजार में भी सोने और चांदी के दाम में गिरावट देखने को मिली है। इंदौर में सोना केडबरी 1450 रुपये घटकर 75850 रुपये प्रति दस ग्राम और चांदी चौरसा 2700 रुपये घटकर 88900 रुपये प्रति किलो रह गई।

आगे और गिरावट की संभावना- एक रिपोर्ट के अनुसार, विभिन्न एजेंसियों ने आइएमएफ को सोने की होल्डिंग चार प्रतिशत घटाने की सिफारिश की है, जिससे आगे और कमजोरी आने की संभावना है।

इंदौर में सोने और चांदी के ताजे दाम- सोना-केडबरी रवा नकद - 75850 रुपये, आरटीजीएस (75700 रुपये), 91.60 कैरेट (69200 रुपये प्रति दस ग्राम)।

चांदीः चौरसा नकद - 88900 रुपये, आरटीजीएस (88800 रुपये), चांदी टंच (88900 रुपये प्रति किलो), चांदी सिक्का (1040 रुपये प्रति नग)।

सोने और चांदी के दाम में गिरावट का असर- चांदी और सोने के दाम में गिरावट का असर ग्राहकों को राहत प्रदान कर रहा है। इस गिरावट की वजह से त्योहारी सीजन के बाद मांग में कुछ सुधार देखने को मिल सकती है।

ईडी की महाराष्ट्र-गुजरात में 23 जगहों पर छापेमारी

● 170 बैंक ब्रांच की जांच,दावा-फर्जी केवायसी से अकाउंट खोले, इनसे 125 करोड़ रुपए का लेन-देन हुआ

मुंबई (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने गुरुवार को मालेगांव के व्यापारी के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग केस की जांच के तहत महाराष्ट्र और गुजरात में कई जगहों पर छापेमारी की। ईडी का दावा है कि व्यापारी ने 100 करोड़ रुपए से ज्यादा का लेन-देन करने के लिए कई लोगों के बैंक खातों का दुरुपयोग किया है। पीएमएलए के तहत हो रही इस कार्रवाई में महाराष्ट्र के मालेगांव, नासिक और मुंबई में और गुजरात के अहमदाबाद- सूरत में कुल 23 परिसरों की तलाशी ली जा रही है। छापेमारी महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में 2,500 से ज्यादा लेन-देन और करीब 170 बैंक शाखाएं जांच के दायरे में हैं। इन खातों से या तो पैसा जमा किया गया या निकाला गया है।

पूर्व सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर की बढ़ सकती हैं मुश्किलें

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई की एक स्पेशल कोर्ट ने भाजपा की पूर्व सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर के खिलाफ 2008 के मालेगांव विस्फोट मामले नया जमानती वारंट जारी किया है। स्पेशल कोर्ट ने यह वारंट इसलिए जारी किया है कि प्रज्ञा सिंह ठाकुर सुनवाई के दौरान उपस्थित नहीं हुई थीं। मालेगांव विस्फोट मामले में प्रज्ञा सिंह ठाकुर आरोपी हैं। स्पेशल कोर्ट ने यह कार्रवाई पूर्व में दिए गए आदेशों के बावजूद कोर्ट में बार-बार अनुस्थित रहने पर की है। ठाकुर कोर्ट के आदेश के बाद भी सुनवाई के दौरान उपस्थित नहीं हो रही थीं।

अब खड़गे और नाना पटोले के सामान की भी हुई चेकिंग

● शिंदे-अजित-अठावले समेत कई नेताओं की जांच हो चुकी, फडणवीस बोले-इसमें गलत क्या

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के मद्देनजर चुनाव आयोग के अधिकारियों ने गुरुवार को कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे का बैग चेक किया। इसकी वीडियोग्राफी भी कराई गई। वे नासिक जिले में चुनाव प्रचार के लिए आए थे। महाराष्ट्र कांग्रेस अध्यक्ष नाना पटोले के हेलीकॉप्टर और बैग की आज चुनाव अधिकारियों ने जांच की। हेलीकॉप्टर की जांच तिरोड़ा हेलीपैड पर की गई। वे गोरेगांव विधानसभा सीट पर एनसीपी उम्मीदवार के लिए प्रचार करने जा रहे थे। वहीं, दूसरी तरफ कराड एयरपोर्ट पर गोवा के सीएम डॉ प्रमोद सावंत के

सामान की भी चेकिंग हुई। एक दिन पहले बुधवार को सीएम शिंदे की भी चेंकिग हुई थी। वे पालघर में चुनाव प्रचार करने पहुंचे थे।

महाराष्ट्र चुनाव

महाराष्ट्र में बीजेपी के चुनावी अभियान में आ रहा हिंदुत्व का तूफानी उबाल

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में इस महीने की 20 तारीख को होने जा रहे राज्य विधानसभा के चुनावों के मद्देनजर बीजेपी ने अपनी रणनीति में महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं, जिसमें हिंदुत्व के मुद्दों को प्रमुखता दी जा रही है। चुनावी प्रचार के दौरान पार्टी ने काटेंगे तो बताएंगे और एक हैं तो सुरक्षित हैं जैसे नारे शामिल किए हैं, जो मतदाताओं के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। बीजेपी अपने घोषणापत्र में धर्मांतरण विरोधी कानून का वादा करते हुए हिंदुत्व पर अपना रुख और मजबूत कर रही है। इसी बीच पार्टी किसानों को यह संदेश दे रही है कि कांग्रेस के शासन में उनकी जमीन वक्फ बोर्ड द्वारा ली जा सकती है। हाल ही में जम्मू-कश्मीर के विशेष दर्जे की बहाली

लव, लैंड, वोट जिहाद और धारा 370 से होगा 'खेला'

की मांग करते हुए विधानसभा में एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसने बीजेपी को अनुच्छेद 370 का मुद्दा उठाने का अवसर दिया है। बीजेपी के वरिष्ठ नेताओं ने कांग्रेस को स्वतंत्रता-पूर्व हैदराबाद के रजाकारों से जोड़ते हुए एक नई बहस छेड़ दी है। उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने भी एक वीडियो में एआईएम आईएम पर निशाना साधते हुए औरंगजेब और पाकिस्तान का जिक्र किया, जो आम तौर पर उनकी बयानबाजी से अलग है। पिछले कुछ महीनों से राज्य में सकल हिंदू समाज संगठन ने बीजेपी नेताओं के समर्थन से लव जिहाद विरोधी रैलियों का आयोजन किया है। जैसे-जैसे चुनाव करीब आ रहे हैं, भाजपा ने वोट जिहाद का मुद्दा भी उठाया है। मुंबई की वर्सोवा सीट पर फडणवीस ने लव जिहाद और भूमि जिहाद का मुकाबला धर्म युद्ध से किया जाना चाहिए का बयान देकर हिंदू वोटरों को अपने पक्ष में करने की कोशिश की। महा विकास अघाड़ी (एमवीए) की मराठा-मुस्लिम एकजुटता, कृषि संकट और जातिगत जनगणना जैसे मुद्दों पर बीजेपी का ध्यान भी है। पार्टी की इस रणनीति का एक प्रमुख कारण यह है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में पार्टी को अपेक्षित सफलता नहीं मिली और उसे केवल 9 सीटें ही मिल पाईं। बीजेपी का मानना है कि हिंदुत्व के मुद्दों पर सख्ती से प्रचार करने से वह अगले विधानसभा चुनाव में अच्छा प्रदर्शन कर सकती है।

फेस रिकॉग्निशन टेक्नोलॉजी से सिंहस्थ 2028 में रहेगी नजर

क्राउड कंट्रोल के लिए श्रद्धालुओं को उपलब्ध कराया जाएगा मोबाइल एप्लिकेशन

भोपाल। उज्जैन में साढ़े तीन साल बाद होने वाला सिंहस्थ टेक्नालॉजी से लेस होगा, जिसमें सुरक्षा और लोगों की सहूलियत के हिसाब से विशेष इंतजाम किये जा रहे है। सुरक्षा के लिए पुलिस सीसीटीवी कैमरे, ड्रोन के साथ फेस रिकॉग्निशन जैसी टेक्नालॉजी का भी इस्तेमाल करेगी। इसके साथ ही क्राउड कंट्रोल के लिए रियल-टाइम ट्रैफिक अपडेट रखने एक मोबाइल एप्लिकेशन भी श्रद्धालुओं को उपलब्ध कराया जाएगा। यहां टेलिकम्युनिकेशन के लिए लेटेस्ट टेक्नालॉजी के इस्तेमाल पर भी फोकस किया जा रहा है। सुरक्षा के सभी मापदंड को लेकर 15 दिन में सिंहस्थ की सुरक्षा व्यवस्था के तहत विशेष कार्ययोजना तैयार कर सरकार के समक्ष पेश की जाएगी। पीएचक्यू के संबंधित शाखाओं द्वारा तैयार कार्ययोजना में मैन पॉवर, ट्रेनिंग, परमानेंट स्ट्रक्चर, टेम्प्रेरी स्ट्रक्चर, उपकरण, वाहन तथा वर्तमान में संसाधनों की उपलब्धता और बजट की मांग अपनी कार्ययोजना में सम्मिलित की जाएगी। फेस रिकॉग्निशन टेक्नोलॉजी या FRT की मदद से किसी भी कैमरा को खास क्षमताएं दी जा सकती हैं। कैमरा इसके फ्रेम में आने वाले सब्जेक्ट के चेहरे पहचानने से लेकर उनके हाव-भाव तक समझ सकता है।कैमरा इस टेक्नोलॉजी की मदद से एक चेहरे से दूसरे चेहरे के बीच अंतर भी समझ जाता है।इसका इस्तेमाल CCTV

से लेकर स्मार्टफोन कैमरा तक में किया जा सकता है और इसके कई फायदे हैं।

डीजीपी ने की प्लानिंग, लिए सुझाव- उज्जैन में सिंहस्थ महाकुंभ-2028 के लिए पुलिस की भी तैयारियां शुरू हो गई हैं। पुलिस महानिदेशक सुधीर सक्सेना ने पिछले दिनों उज्जैन आई जी और एसपी की मौजूदगी में पुलिस मुख्यालय भोपाल में वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के साथ बैठक कर कार्ययोजना पर विस्तार से चर्चा की। डीजीपी सक्सेना ने कहा कि सिंहस्थ महाकुंभ - 2028 में सुव्यवस्थित यातायात और सुरक्षा के इंतजाम जरूरी हैं। इस दौरान क्राउड कंट्रोल और क्राउड मैनेजमेंट सिस्टम बहुत ही मजबूत रखना होगा। क्राइम कंट्रोल, एंटी नेशनल एलिमेंट कंट्रोल तथा टेरेरिस्ट गतिविधियों पर हर पल निगरानी रखनी होगी। सुरक्षा व्यवस्था में लगे सभी व्यक्तियों की परस्पर संचार व्यवस्था तथा अन्य विभागों से भी अच्छा सम्पर्क और समन्वय होना अत्यावश्यक है।

स्पेशल सुरक्षा इंतजाम करने की भी तैयारी

पुलिस प्रशासन सिंहस्थ मेले के दौरान श्रद्धालुओं और पर्यटकों की सहायता के लिए एक हेल्पलाइन नंबर जारी करेगा, जो 24×7 एक्टिव रहेगा। महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा के लिए विशेष हेल्प डेस्क और बाल सुरक्षा केंद्र स्थापित करने की योजना बनाई जाए। भीड़ प्रबंधन और आपातकालीन स्थितियों से निपटने के लिए स्वयं सेवक और स्थानीय लोगों को भी शामिल किया जाए। बैठक में सरबजीत सिंह सेवानिवृत्त विशेष पुलिस महानिदेशक ने अपने सुझाव दिए है जो सिंहस्थ-2004 में आईजी उज्जैन तथा सिंहस्थ 2016 में विशेष पुलिस महानिदेशक इंटेलिजेंस के पद पर रहे हैं। साथ ही सिंहस्थ-2004 में उज्जैन एसपी रहे और अब विशेष पुलिस महानिदेशक उपेन्द्र जैन ने सुझाव दिए। इनके अलावा सिंहस्थ-2016 में एसपी उज्जैन रहे मनोहर वर्मा सेवानिवृत्त आईपीएस ने अनुभव साझा किए। सरबजीत सिंह ने कहा कि क्राउड मूवमेंट का विशेष ध्यान रखें। साथ ही टेली कम्यूनिकेशन में लेटेस्ट टेक्नोलॉजी का प्रयोग करना आवश्यक है। स्पेशल डीजी उपेन्द्र जैन ने कहा कि सभी विभागों से पुलिस का अच्छा समन्वय होना कार्य को आसान बना देता है। रिटायर आईपीएस मनोहर वर्मा ने कहा कि स्नान घाट तकनीकी रूप से अच्छी प्लानिंग के अनुसार बने तथा ट्रैफिक एवं महिला व बाल सुरक्षा के लिए उज्जैन के पड़ोसी जिलों को भी कार्य योजना में शामिल किया जाए।

सोमनाथ जबलपुर एक्सप्रेस में बढ़ाया जाएगा थर्ड एसी कोच

दोनों ओर से निरस्त रहेगी सिकंदराबाद और दानापुर एक्सप्रेस

भोपाल। जबलपुर से गुजरात व हजरत निजामउद्दीन एक्सप्रेस जाने वाले यात्रियों की बढ़ती भीड़ को देखते हुए रेलवे ने जबलपुर-वेरावल सोमनाथ एक्सप्रेस ट्रेन में वातानुकूलित तृतीय श्रेणी के एक अतिरिक्त कोच लगाने का निर्णय लिया हैं। ट्रेन की वेटिंग लिस्ट को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया है। यह

अतिरिक्त कोच गाड़ी संख्या 11464 जबलपुर से वेरावल सोमनाथ एक्सप्रेस में 20 नवंबर तक के लिए लगाया जाएगा। वहीं गाड़ी संख्या 12160 जबलपुर से अमरावती एक्सप्रेस में 17 नवंबर तक एक तृतीय श्रेणी का अतिरिक्त कोच लागया जाएगा। दक्षिण मध्य रेलवे के अंतर्गत मालगाड़ी डी-रेल की घटना के कारण, भोपाल मण्डल के इटारसी स्टेशन से होकर गुजरने वाली गाड़ी संख्या 12791 सिकंदराबाद-दानापुर एक्सप्रेस 14 नवंबर को अपने प्रारंभिक स्टेशन निरस्त किया गया है, इसी प्रकार, गाड़ी संख्या 12792 दानापुर-सिकंदराबाद एक्सप्रेस 16 नवंबर को अपने प्रारंभिक स्टेशन से निरस्त रहेगी। भोपाल रेल मंडल के अधिकारियों ने बताया कि यात्री किसी भी तरह की असुविधा के चलते रेलवे हेल्प लाइन नंबर 139 पर संपर्क कर सकते हैं।

भोपाल के सरकारी दफ्तर में 3 दिन से लटके ताले

सहायक संचालक पर केस के विरोध में कर्मचारियों ने छुट्टी ली, अटके काम

भोपाल। भोपाल के एक सरकारी दफ्तर में पिछले 3 दिन से ताले लटके हुए हैं। ये दफ्तर है संयुक्त संचालक कृषि विभाग का, जो कमिश्नर ऑफिस की बिल्डिंग में है। इससे भोपाल, राजगढ़, सीहोर, रायसेन और विदिशा जिलों के काम अटक गए हैं। 19 अधिकारी-कर्मचारी ऑफिस नहीं आ रहे हैं। कृषि विभाग के सहायक संचालक मनोज चौधरी पर एफआईआर दर्ज होने के विरोध में अधिकारी-कर्मचारियों ने छुट्टी ली है। ये सभी चौधरी का समर्थन कर रहे हैं। एफआईआर ऑफिस की ही एक महिला कर्मचारी ने दर्ज कराई है। ज्वाइंट डायरेक्टर बीएल बलैया ने बताया, पिछले 3 दिन (11, 12 और 13 नवंबर) से कर्मचारियों ने छुट्टी ले रखी है। कुछ ने पहले से ही छुट्टी स्वीकृत करवा ली थी। उन्हें कहा गया है कि वे गुरुवार से ऑफिस आ जाए। उनकी बात शासन स्तर तक पहुंचा दी है। संयुक्त संचालक कृषि विभाग

में पदस्थ सहायक संचालक चौधरी पर 8 नवंबर को विभाग की ही एक महिला कर्मचारी ने छेड़छाड़ का आरोप लगाया था। उसका कहना था कि अधिकारी ने उसे बैड टच किया। महिला की शिकायत पर कोहेफिजा थाना पुलिस ने सेक्शुअल हैरेसमेंट की धाराओं में केस दर्ज किया था। एफआईआर के अनुसार, छेड़छाड़ की यह घटना बीते शुक्रवार को दोपहर में भोपाल कलेक्ट्रेट, पुराना सचिवालय के डी ब्लॉक की है। आरोप है कि कृषि विभाग के सहायक संचालक ने महिला कर्मचारी को ऑफिस की सीढ़ियों पर अकेला पाकर गंदी हरकत की थी। मामले में कोहेफिजा पुलिस ने बीएनएस 2023 की धारा 74, 75 और 78 में मामला दर्ज किया है। महिला के पति के अनुसार मनोज चौधरी साल 2016 के पहले से यहां पदस्थ है और कई अन्य महिलाओं को भी वह इस तरह से परेशान कर चुका है। सहायक संचालक पर केस के बाद विरोध शुरू हो गया है। स्टाफ का कहना है कि सहायक संचालक बेकसूर है। उन पर झूठा केस दर्ज कराया गया है, इसलिए मामले की निष्पक्ष जांच हो। मध्यप्रदेश कृषि अधिकारी संघ के बैनर तले सोमवार को अधिकारी-कर्मचारियों ने कमिश्नर और कलेक्टर को ज्ञापन सौंपे। इनमें महिला कर्मचारी भी मौजूद थीं। दूसरी ओर, उन्होंने 3 दिन से काम नहीं किया है। इस वजह से संभागीय ऑफिस में ताले लटके हुए हैं। इस ऑफिस में कुल 19 अधिकारी-कर्मचारी हैं।

सात हजार खदानें जियो टैग, चार स्थानों पर जांच शुरू

डेढ़ माह में लगेंगे एआई बेस्ड 41 ई-चेकगेट, कैमरा, नंबर प्लेट रीडर से होंगे लैस

भोपाल। प्रदेश में खनिजों के अवैध परिवहन और खनन पर रोक लगाने के लिए सरकार ने एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) तकनीक का सहारा लिया है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने घोषणा की है कि राज्य में 41 ई-चेकगेट स्थापित किए जा रहे हैं, जिनसे खनिज परिवहन में लगे वाहनों की पूरी निगरानी होगी। ये ई-चेकगेट वेरीफोकल कैमरा, आरएफआईडी रीडर और ऑटोमेटिक नंबर प्लेट रीडर से सुसज्जित होंगे, जिससे बिना मान्य दस्तावेज के चलने वाले वाहनों का तुरंत पता लगाया जा सकेगा।

4 पायलट प्रोजेक्ट से शुरुआत, दिसंबर तक सभी 41 ई-चेकगेट होंगे चालू- अवैध परिवहन पर नजर रखने के लिए भोपाल में एक राज्यस्तरीय कमांड और कंट्रोल सेंटर स्थापित किया गया है, जबकि भोपाल और रायसेन में जिला स्तर के सेंटर भी बनाए गए हैं। दिसंबर 2024 तक सभी 41 ई-चेकगेट स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है। वर्तमान में, 4 महत्वपूर्ण मार्गों पर पायलट प्रोजेक्ट के रूप में ई-चेकगेट लगाए जा चुके हैं, जो अवैध खनिज परिवहन को रोकने में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

ड्रोन और सैटलाइट से खदानों पर नजर, थ्री-डी इमेजिंग के जरिए सटीकता- प्रदेश में खनिज संपदा का बेहतर प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए सैटलाइट और ड्रोन आधारित निगरानी प्रणाली भी शुरू की गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि इस पहल के तहत प्रदेश की 7,000 से अधिक खदानों को जियो-टैग कर उनकी सीमाओं का निर्धारण किया गया है। इस परियोजना के पूर्ण रूप से लागू होने पर अवैध खनन की घटनाओं पर नजर रखी जा सकेगी, और स्वीकृत खदानों में खनिज उत्खनन का सटीक आंकलन थ्री-डी इमेजिंग और वॉल्यूमेट्रिक एनालिसिस के जरिए किया जा सकेगा। इस तरह की व्यवस्था लागू करने का फैसला सरकार ने मई में लिया था। इसके बाद प्रमुख सचिव, खनिज साधन ने सभी कलेक्टरों को पत्र लिखा था। इसमें कहा गया था कि सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर खनिजों के अवैध उत्खनन, परिवहन और भंडारण पर प्रभावी नियंत्रण के लिए कार्यवाही की जा रही है। इस व्यवस्था को लागू करने में जिला स्तर पर मानव रहित चेकगेट लगाए जाएंगे। कलेक्टरों से कहा गया था कि प्रदेश के 40 ऐसे स्थानों को चिन्हित किया गया है जहां से खनिजों का सर्वाधिक परिवहन होता है। इन सभी स्थलों पर आगामी 10 माह के भीतर चेकगेट व्यवस्था लागू कर दी जाएगी। राज्य स्तर पर स्टेट कमांड सेंटर और जिला स्तर पर जिला कमांड सेंटर के माध्यम से अवैध परिवहन करने वाले वाहनों की निगरानी की जाएगी। चेकगेट के सॉफ्टवेयर को ई-टीपी जारी करने वाले पोर्टल के साथ इंटीग्रेट कर बिना रॉयल्टी चुकाए परिवहन करने वाले वाहन मालिकों के विरुद्ध अवैध परिवहन का प्रकरण दर्ज किया जाएगा। साथ ही खनिज परिवहन करने वाले वाहनों में आरएफ टैग लगाया जाएगा, जिसकी सहायता से वाहनों की वैधता की जांच की जा सकेगी।

पीसीसी चीफ की मांग-37 बूथों पर हो पुनर्मतदान

बीजेपी को बताया पागल हाथी,आदिवासी-जाटवों पर हमले भाजपा का चाल-चेहरा-चरित्र

भोपाल। बुधनी और विजयपुर दोनों उपचुनाव में हमने लगभग 100 शिकायतें निर्वाचन आयोग से की। लेकिन निर्वाचन आयोग ने कोई कार्रवाई नहीं की। हमने आशंका जताई थी कि गुंडे, बदमाश और डकैत चुनाव को प्रभावित कर सकते हैं। शिकायत भी की। लेकिन प्रशासन ने सीमाएं सील नहीं की और गुंडों ने आदिवासियों, दलितों को पीटा और गोलियां चलाईं। ये कहना है कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष चीफ जीतू पटवारी का। पटवारी ने गुरुवार दोपहर प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान प्रदेश सरकार पर कई गंभीर आरोप लगाए। इसके साथ ही उन्होंने विजयपुर के 37 बूथों पर फिर से मतदान कराने की मांग भी की है। पटवारी ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने निर्णय लिया है कि पूरे प्रदेश में इस दलित विरोधी बीजेपी के खिलाफ प्रदेश व्यापी आंदोलन किया जाएगा। भाजपा बाबा साहब अंबेडकर, लोकतंत्र और मताधिकार की विरोधी है। इस दौरान कांग्रेस मीडिया विभाग के अध्यक्ष मुकेश नायक जेपी धनोपिया राजीव सिंह भूपेंद्र गुप्ता मिथुन अहिरवार शैलेंद्र पटेल अपराजिता पांडे मौजूद थे। पटवारी ने कहा, हमने विजयपुर में लगभग 37 पोलिंग बूथों पर फिर से मतदान कराने की मांग की है। स्क्रूटनी में हमने आवेदन दे दिया। हम प्रदेश निर्वाचन आयोग को भी री-पोलिंग को लेकर पत्र भेज रहे हैं। विजयपुर में कांग्रेस पार्टी को 50000 वोटों से जीतने की संभावना थी। अभी भी 25000 से ऊपर जीतेंगे। लेकिन प्रशासन ने कैसे वोटिंग करवाई। वहां पर बूथों पर कब्जा कर लिया। सेक्टर मजिस्ट्रेट को मारा गया। कर्मचारियों का उपयोग करके पुलिस अधिकारी वोट डलवा रहे हैं। मजिस्ट्रेट पर हमला कर रहे हैं और पुलिस मौन बैठी है। निर्वाचन आयोग के रुख की भी हम निंदा करते हैं। निर्वाचन कार्यालय ने बीजेपी को सपोर्ट करने की क्लियर कट पॉलिसी बना रखी थी।

गंभीर शिकायतों पर भी नहीं हुआ एक्शन- पटवारी ने कहा, हमने सौ शिकायतें की। उसमें विजयपुर विधानसभा में जाति विशेष के लोगों को बीएलओ बनाने की पहली शिकायत की थी। फिर अति संवेदनशील बूथ बनाने को लेकर शिकायत की थी कि यहां पर गड़बड़ हो सकती है। हमने हर पोलिंग बूथ पर सीसीटीवी कैमरे लगाने की मांग की थी। सरकारी कर्मचारियों का जितना अमला चुनाव में लगा था, वन विभाग हो या स्वास्थ्य विभाग या रेवेन्यू, या फिर आंगनवाड़ी कार्यकर्ता हों या छोटे कर्मचारी सभी बीजेपी के एजेंट बनकर काम कर रहे थे। हमने इसकी भी शिकायत की थी। लेकिन एक भी शिकायत पर एक्शन नहीं हुआ। जीतू पटवारी ने कहा- भारतीय जनता पार्टी की हालत पागल हाथी जैसी हो गई है, वो मद मस्त है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा सिर्फ पॉलिटिक्स करने वहां गए और धरना दिया। इससे क्या मैसेज है। तांडव तुम करो, आतंक तुम्हारा, कर्मचारियों का दुरुपयोग तुम करो, भाजपा के गुंडे आदिवासियों पर गोलियां चलाएं। हद तो तब हुई जब कल चुनाव के बाद गाली दे देकर जाटव समाज के लोगों को पीटा जा रहा है और प्रशासन मौन है। प्रशासन सहयोग कर रहा है। कल रात बाबा साहब अंबेडकर की मूर्ति को तोड़ दिया गया। यह भारतीय जनता पार्टी का मूल चाल,चेहरा, चरित्र है। उनके घरों में आग लगा दी गई। आखिर बीजेपी कैसा मप्र बनाना चाहती है। आप संविधान विरोधी हो। दलित समाज को क्यों इस तरह की यातना दे रहे हैं। जो फसलों में आग लगा रहे हैं जानवरों का चारा जला दिया गया। उनकी रखी हुई धान में आग लगा दी। ये पागल हाथी नहीं तो क्या है। पीसीसी चीफ ने कहा- केवल 1200 रुपए देकर लाड़ली बहना के वोट चाहिए। उसी लाड़ली बहना के पतियों को सरकार अपने गुंडों से पिटवाती है। आदिवासियों को गोलियां लगी। अब जाटव बहुल गांवों को घेर-घेर कर मार रहे हैं और आग लगा रहे हैं। इसका भारतीय जनता पार्टी और नरेंद्र मोदी के पास।

भोपाल में खुलेगा मध्य प्रदेश का पहला खादी मॉल

अमेजन और फ्लिपकार्ट से होगा करार,एमपी नगर जोन 1 में हो रहा निर्माण

भोपाल। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में जल्द ही प्रदेश का पहला खादी मॉल खुलने वाला है। यह मॉल अपने आप में भव्य होगा। साथ ही इसमें सादी पहनने वालों के लिए कई ऑप्शन होंगे। इसका निर्माण भोपाल शहर के एमपी नगर जोन-1 इलाके में किया जा रहा है। खादी मॉल चित्तौड़ कॉम्प्लेक्स में बनेगा। मध्य प्रदेश खादी ग्रामोद्योग बोर्ड यह मॉल बना रहा है। साल 2025 तक यह मॉल बनकर तैयार हो जाएगा। इस तीन मंजिला मॉल में खादी के कपड़े, हैंडीक्राफ्ट और दूसरे कुटीर उत्पाद मिलेंगे। अभी तक सरकारी दफ्तरों के लिए इस्तेमाल हो रहे इस कॉम्प्लेक्स को खाली करा लिया गया है। पुराने रिकॉर्ड हटाए जा रहे हैं और दफ्तरों को तोड़ा जा रहा है। मॉल के ग्राउंड फ्लोर पर अभी खादी एम्पोरियम है। यह एम्पोरियम भी मॉल का हिस्सा होगा। पहले फ्लोर पर अलग-अलग तरह के हैंडीक्राफ्ट की प्रदर्शनी लगेगी। यहां से हैंडीक्राफ्ट खरीदे भी जा सकेंगे। खादी

और सिल्क के नए ज़माने के कपड़े भी बिकेंगे। दूसरे फ्लोर पर विंध्या वैली ब्रांड के उत्पाद मिलेंगे। ग्राउंड फ्लोर पर परंपरागत खादी के कपड़े मिलेंगे। मॉल की छत पर एक खुला कैफेटेरिया भी रखने का प्लान है। मध्य प्रदेश खादी ग्रामोद्योग बोर्ड कई दिग्गज कंपनियों जैसे फ्लिपकार्ट और अमेजन से भी बात कर रहा है। इनके जरिए मॉल के उत्पादों की ऑनलाइन बिक्री की जाएगी। इससे ग्राहकों को घर बैठे सामान ऑर्डर करने की सुविधा मिलेगी। इससे सैकड़ों की संख्या में लोगों को रोजगार मिलेगा। साथ ही खादी उत्पादों को बाजार में एक अच्छा अवसर दिया जाएगा, ताकि उनका विकास हो सके।

हम बंट जाएंगे तो जरूर छंट जाएंगे : मुनि प्रमाण सागर

महाराज ने यूपी सीएम योगी अदित्यनाथ का किया समर्थन

भोपाल। बंटेंगे तो कटेंगे के बायन मुनि स्वामी प्रमाण सागर महाराज ने समर्थन किया है। उन्होंने कहा कि हम बंट जाएंगे तो छंट जाएंगे। इसके साथ ही कुंभ में प्रवेश को लेकर उन्होंने कहा कि जो मूर्तिपूजा में विश्वास नहीं रखते वो मंदिर में जाकर क्या करेंगे। उन्होंने समाज में एकता बनाए रखने की अपील करते हुए चेताया कि आपसी विभाजन से समाज और देश को केवल हानि होगी। इंदौर में आयोजित रथावर्तन महा महोत्सव में शामिल होने के लिए 108 मुनि प्रमाण सागर महाराज ने यूपी सीएम योगी आदित्यनाथ के बयान का समर्थन किया है। उन्होंने 'बंटेंगे तो कटेंगे'का समर्थन करते हुए कहा कि 'हम बंट जाएंगे तो छंट जाएंगे।' वहीं, कुंभ मेले में अल्पसंख्यक लोगों के प्रवेश को लेकर मुनि ने अपनी राय रखी। उन्होंने कहा कि जो लोग मूर्तिपूजा में विश्वास नहीं करते, उनके लिए मंदिर जाना आवश्यक नहीं है। स्वामीजी के अनुसार मंदिर जाने का अर्थ केवल पूजा से नहीं है, बल्कि आस्था और श्रद्धा से है। उन्होंने आगे कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने विश्वास और धार्मिक आस्थाओं के अनुसार आचरण करने की स्वतंत्रता है। हालांकि उनके इस बयान ने इंदौर

में चर्चा का माहौल बना दिया है। जानकारी के मुताबिक 15 नवंबर को इंदौर में ऐतिहासिक आयोजन होने जा रहा है, जिसमें 108 रथों की भव्य रथ यात्रा मुनि प्रमाण सागर महाराज के सानिध्य में निकाली जाएगी। यह ऐतिहासिक आयोजन न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक बनेगा, बल्कि इसके जरिए इंदौर के नाम एक नया विश्व रिकॉर्ड भी बनाया जाएगा। इस विशेष रथ यात्रा में सोने, चांदी और अष्ट धातु से बने रथों का उपयोग किया जाएगा। प्रत्येक रथ को खूबसूरती से सजाया गया है, और इसे धार्मिक आस्था के साथ-साथ शहर की सांस्कृतिक धरोहर को भी प्रस्तुत करने का माध्यम बनाया गया है। आयोजन में लाखों भक्तों के शामिल होने की संभावना है, जो भारत के विभिन्न हिस्सों से इस ऐतिहासिक क्षण का हिस्सा बनने के लिए इंदौर आएंगे। वहीं, स्वामी प्रमाण सागर महाराज ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि समाज में विभाजन और असमानता का प्रसार अंततः समाज को विघटन की ओर ले जाएगा। अगर हम एकजुट रहेंगे, तभी समृद्धि और विकास संभव है।

संपादकीय

बुलडोजर न्याय नहीं!

बुलडोजर को न्याय का पर्याय बताने के राजनीतिक प्रयासों पर देश की सर्वोच्च अदालत ने सख्ती से रोक लगा दी है। पूर्व सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सत्ता द्वारा बुलडोजर के मनमाने उपयोग पर गहरी नाराजी जताई थी। बुधवार को उसने इस मामले में विस्तृत गाइड लाइन भी जारी कर दी। इसका लुब्बो लुआब यही है कि कार्यपालिका, न्यायपालिका नहीं हो सकती। अगर अपराध किया है तो उसकी सजा कानून के हिसाब से ही दी जाएगी और यह काम अदालतें ही करेंगी। दूसरे, घर के किसी एक व्यक्ति की गलती की सजा पूरे परिवार को घर ढहाकर देना पूरी तरह से अन्याय है। कोर्ट ने साफ कहा कि अगर उसकी गाइड लाइन से हटकर कोई अधिकारी बुलडोजर चलाने की कार्रवाई करता है तो इससे होने वाले नुकसान की भरपाई उसकी तनख्वाह से की जाए। कोर्ट ने कहा कि केवल सार्वजनिक कार्यों के लिए जरूरी जमीन पर अतिक्रमण हटाने के लिए बुलडोजर चलाया जा सकता है, लेकिन उसकी भी एक निश्चित प्रक्रिया है, जिसका पालन करना अनिवार्य है। यही नहीं अगर प्रशासन किसी संरचना के ध्वस्तीकरण का आदेश पारित करता है तो उसके विरूद्ध भी अपील का अधिकार रहेगा। यह ध्वस्तीकरण भी बिना पूर्व में नोटिस दिए नहीं हो सकेगा। इस आदेश के बाद उम्मीद है कि कुछ सरकारों द्वारा बुलडोजर के बेजा इस्तेमाल की प्रवृत्ति पर लगाम लगेगी। दरसअल इसकी शुरूआत यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपराधियों को दंड देने के बतौर उनके घर ढहाने से की थी। योगी आदित्यनाथ को पूरे देश में बुलडोजर बाबा के नाम से मशहूर हो गए। भाजपा ने बुलडोजर को अपनी प्रशासन शैली का प्रतीक बना लिया था। लेकिन इस बात को भुला दिया गया कि मनमाने ढंग से कहीं भी और किसी पर भी बुलडोजर चलाना न्यायसंगत नहीं है। सरकार बिना सबूत के किसी को सीधे सजा नहीं दे सकती। यह काम अदालतों का है। शीर्ष कोर्ट ने कहा कानून का शासन, नागरिकों के अधिकार और प्राकृतिक न्याय का सिद्धांत आवश्यक शर्तें हैं, अगर किसी संपत्ति को केवल इसलिए ध्वस्त कर दिया जाता है क्योंकि व्यक्ति पर आरोप लगाया गया है तो यह पूरी तरह से असंवैधानिक है। योगी के बुलडोजर मॉडल को अन्य राज्यों ने भी अपनाया। यहां तक पश्चिम बंगाल में ममता बैनर्जी ने भी एक मामले में ऐसी ही कार्रवाई की। लेकिन यह बुलडोजर न्याय शुरू से ही विवादों में रहा है। लेकिन भाजपा शासित सरकारें इसे परोक्ष न्याय के रूप में पेश कर इसका समर्थन करती रहीं। हालांकि कोर्ट के फैसले का भाजपा सहित सभी पक्षों ने स्वागत किया है। विपक्ष का आरोप था कि भाजपा बुलडोजर का इस्तेमाल मुख्य रूप से मुस्लिम समुदाय के खिलाफ कर रही है। बुलडोजर उसके राजनीतिक एजेंडे का प्रतीक बन गया है। हालांकि सरकारों का कहना था कि बुलडोजर किसी समुदाय विशेष के खिलाफ नहीं है। यह सभी के लिए है। कोर्ट के फैसले को विपक्ष न्याय की जीत और मुस्लिम समुदाय इसे राहत भरा फैसला बता रहा है। इस फैसले और गाइड लाइन के बाद योगी आदित्यनाथ आगे कैसी कार्रवाई करेंगे, यह देखने की बात है।

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक भारत के राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। संप्रति पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा के डॉ. आंबेडकर चेयर में चेयर प्रोफेसर हैं।

छात्र आंदोलन से घिरा उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश में छात्रों के संघर्ष चल रहे हैं। उनकी ओर से यह बार-बार कहा जा रहा है कि हमारा आंदोलन बिल्कुल अराजनीतिक और अहिंसक आंदोलन है। छात्रों ने अपनी मांगों को लेकर अपनी मंशा प्रकट की है और वे चाहते हैं कि उनके साथ न्यायपूर्ण व्यवहार हो। उत्तर प्रदेश में सभ्य लोग रहते हैं। यहाँ की सांस्कृतिक विरासत में भगवान् राम हैं। यहाँ ऋषियों-मुनियों और समाजचिन्तकों द्वारा अनेक उपदेश दिए गए। उत्तर प्रदेश की महिमा इसलिए पूरे भारत में अपनी एक अलग पहचान लिए गई जाती है लेकिन उत्तर प्रदेश आजकल बहुत ही अप्रिय घटनाओं से अपनी साख खो रहा है। यह तब हो रहा है जब रामराज स्थापित करने वाली सरकार प्रदेश में काम कर रही है।

बहराइच की वजह से धार्मिक लड़ाई उत्तर प्रदेश में हो रही है। असंतुष्ट लोग अपनी-अपनी डफली-अपना-अपना राग अलाप रहे हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री की छवि तेज तर्रार लोगों में होती है। वह गवर्नेंस, लॉ एंड ऑर्डर के मामले में सशक्त मुख्यमंत्री माने जाते हैं। योगी सरकार की एक अच्छी आलोचना यह रही है कि वह किसी बात से समझौता नहीं करते। यह आलोचना प्रदेश के कानून व्यवस्था के लिए ठीक है। कुछ समय पहले उत्तर प्रदेश के देवरिया में ब्राह्मण परिवार के कई लोगों को मार दिया गया था। उस पर लीपापोती हुई। अभी जिस व्यक्ति की बहराइच में हत्या हुई वह भी ब्राहमण है। उत्तर प्रदेश में जिस समय देवरिया में ब्राह्मण परिवार के लोगों की हत्या हुई थी और उसमें एक यादव भी हत्या का शिकार हुआ था उसी दौरान जौनपुर में भी रक्तरंजित घटनाएँ घटीं।

इस उत्तर प्रदेश में यह बहुत ही हृदय-विदारक घटनाएँ घटी हैं। अब उत्तर प्रदेश में छात्रों के साथ जो हो रहा है वह ठीक नहीं है। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के बाहर पीसीएस और आरओ व एआरओ प्रारंभिक परीक्षा एक दिन एक शिफ्ट में कराने की मांग और नॉर्मलाइजेशन का विरोध कर रहे प्रतियोगी छात्रों की भरी संख्या कई दिनों से प्रयागराज में एकत्रित है। इन्हें समझने वाला उत्तर प्रदेश में कोई नहीं है या समझना नहीं चाहता यह बड़ा सवाल है। छात्रों की समस्याओं का समाधान निकालने के लिए संवाद के माध्यम से हर संभव प्रयास क्या सरकार का खोखला दावा है? वस्तुतः कई दिन से चल रहे आंदोलन में छात्र भी खीझ चुके हैं और सरकार में राजनीतिक रोटी सेकने वाले यह चाहते हैं कि मामला ठंडा न होने पाए।

सिविल ड्रेस में हरकत में आती उत्तर प्रदेश पुलिस वैसे भी कई बार कई मामले में सवालों के घेरे में रह चुकी है। प्रयागराज में छात्रों के साथ उनकी अपनी मजबूरी में की जा रही कार्रवाई हिंसक रूप लेती जा रही है। लड़कियों के साथ उनकी अभद्रता और विकलांग छात्राओं के साथ किया जा रहा जुर्म किसी भी तरह से स्वीकार तो नहीं हो सकता। आखिर उन्हें कौन डिक्टेट कर

रहा है और किसके कहने से बैरीकेडिंग के माध्यम से छात्रों को रोकने की कोशिश हो रही है, सबसे पहले तो उत्तर प्रदेश सरकार के नेतृत्वकर्ता को पता करना चाहिए। महाराष्ट्र में चुनाव ज़रूरी है लेकिन उत्तर प्रदेश के छात्रों का हित भी ज़रूरी है। योगी सरकार और योगी की जो प्रतिष्ठा है वह उनके अनुपस्थिति में कोई भंग करना चाहता है तो उसका भी पर्दाफाश किया जाना चाहिए। वैसे योगी स्वयं सबके हित में फैसले के लिए जाने जाते हैं और वह खद कई बार प्रदेश की सबकी उन्नति के लिए प्रभावशील काम करते हुए प्रतिष्ठा अर्जित कर चुके हैं। बैरीकेडिंग के माध्यम से छात्रों को रोकने की कोशिश आज नाकाम हुई है और हजारों की संख्या में एकत्रित छात्रों ने यह बता दिया है कि वे किसी भी समस्या से जूझने के लिए तैयार हैं और वे झुकेंगे नहीं। अब उत्तर प्रदेश का निदेशालय फौरी कार्रवाई करने के लिए बैठकें करने लगा। सवाल यह है कि यदि हिंसा और षड्यंत्र करने से पूर्व छात्रों के हित में निर्णय लेने की सुध क्यों मैकेनिज्म में बैठे लोग लिए? वे इस मसले को टालते क्यों रहे? क्या उत्तर प्रदेश की प्रतिष्ठा दांव पर लगाने में आनंद आते हैं क्या? अपॉलिटिकल चीजों को राजनितिक रंग देने का अवसर देने वाले लोगों पर सक्रिय कार्रवाई यदि सर्कार करके मैसे डे तो निश्चय ही इसका एक सकारात्मक संदेश जाएगा। यदि ऐसा नहीं होता है तो घी में आग डालने वाले अपने षड्यंत्र को योगी सरकार और योगी के खिलाफ रचने में कामयाब रहेंगे और छात्रों का जो अहित होगा वह तो होगा ही।

कुछ समय पहले उत्तर प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक निर्णय की खबरे जब मीडिया में आई थीं कि उत्तर प्रदेश सरकार यह चाहती है हजारों प्राइमरी विद्यालयों को एक साथ बंद करने का निर्णय सरकार लेने जा रही है। यह निर्णय लेने का विचार कैसे मन में आया और किसने यह सलाह दी? जब हो हल्ला हुआ तो वेसिक की निदेशिका की ओर से बयान भी जारी हुआ। कंचन वर्मा ने एक बयान में कहा कि ऐसी भ्रमित करने वाली बातों में लोगों को नहीं आना चाहिए। प्रदेश में कोई भी स्कूल बंद नहीं हो रहा है। प्रदेश का प्राथमिक शिक्षा विभाग विद्यालयों में मानव संसाधन और आधारभूत सुविधाओं के विकास, शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर करने तथा छात्रों, विशेषकर बालिकाओं के, ड्रापआउट दर को कम करने के लिए सतत प्रयत्नशील है। हमारा उदेश्य शिक्षा की गुणवत्ता को और बेहतर करना है।

योगी सरकार में सम्मिलित लोग जिन्हें योगी पसंद न हों, वे खुलकर आयें और योगी को न बदनाम करें और न ही प्रदेश को बदनाम करें। यदि सच है तो पूरी जिम्मेदारी के साथ खुलकर सामने आयें। यह जो बार-बार प्रदेश की छवि ख़राब करने की कोशिश की जा रही है उससे उत्तर प्रदेश की केवल और केवल छवि पर असर हो रहा है बाकी कुछ नहीं होने वाला है। पूरे भारत में छात्र हित को सर्वोपरि रखना ही ठीक है। जनप्रिय सरकारें छात्रों और युवाओं के साथ जरूरतमंद लोगों का ख्याल पहले रखती हैं। उत्तर प्रदेश में योगी ने खुद कई बार जनप्रिय-सरकार होने का दावा किया है। ऐसे में, योगी को अपनी रणनीति यह बनानी होगी कि वह किस प्रकार से उत्तर प्रदेश के अपने असहयोगियों और ब्यूरोक्रेसी को प्रदेश के नागरिकों के हित में ज्यादा सक्रिय कर सकते हैं। वरना छवि बिगाड़ने की जो व्यापक स्तर पर कोशिश चल रही है, इसका असर आने वाले समय में व्यापक स्तर पर पड़ने वाला है और इसका फायदा किसी और को मिलेगा। छात्र भले ही कहें कि यह अराजनीतिक आंदोलन है और हमारी मांगें हमारी अपनी हैं लेकिन नेपथ्य से खेल खेलने वाली राजनितिक पार्टियाँ किसी न किसी तरह आंदोलन को प्रभावित करने से बाज नहीं आतीं। इसलिए अच्छा यही है कि ऐसी कोशिशों में लगी शक्तियों के षड्यंत्र को पहले ही समझकर उसके विरुद्ध अधिकतम छात्रहित में सहयोग प्रदान किया जाए। कम से कम उन छात्रों के ऊपर किसी हिंसा से बचाव किया जाए जो निःशक्त हैं और दिव्यांग होते हुए भी आज की चुनौतियों के साथ लड़ रही हैं और खुद को सक्षम बनाकर भारत को सक्षम बनाने के लिए संघर्ष कर रही हैं।

उत्तर-प्रदेश की गरिमा का भी तो सवाल है, उसे ही बचाने के लिए सरकार को सक्रिय होकर ऐसे अप्रिय घटना न होने देने के लिए प्रयास करना चाहिए। जो भी हो उत्तर प्रदेश में कुछ समय से जो अप्रत्याशित घटनाएँ घट रही हैं उसकी तह में जाकर ही उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश बनाया जा सकता है। यह तभी हो सकेगा जब हमारा दृष्टिकोण सर्वहितकारी होगा और ऐसे आंदोलन से प्रदेश को बचाया जा सकेगा।

जयंती पर विशेष

प्रमोद दीक्षित मलय

लेखक शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक एवं लोक संस्कृति दर्शन यात्रा के संयोजक हैं।

प्राथमिक शिक्षा में गिजुभाई बधेका के प्रयोग एवं परिणाम

'प्राथमिक पाठशाला की चौथी कक्षा मैं तुम्हें सौंपता हूं। यह उसका पाठ्यक्रम है। ये उसमें चलने वाली कुछ पाठ्य-पुस्तकें हैं, ये शिक्षा विभाग के छुट्टी आदि के कुछ नियम हैं।....देखो, जैसे चाहो वैसे प्रयोग करने की स्वतंत्रता तो तुम्हें है ही, इसके लिए तो तुम आए ही हो। लेकिन यह भी ध्यान में रखना कि बारहवें महीने में परीक्षा सामने आ खड़ी होगी और तुम्हारा काम परीक्षा के परिणामों से मापा जाएगा।' दृश्य दो, विद्यालय परिसर में परस्पर बातचीत करते शिक्षक गण। 'सच कहता हूं, मुझे तो आप एक अजीब आदमी मालूम पड़ते हैं। मैं मानता हूं कि आपका प्रयोग सफल हुआ है। हमें विश्वास नहीं होता था कि प्राथमिक शाला की पढ़ाई में भी कुछ सुंदर परिवर्तन किये जा सकते हैं।' दृश्य तीन, विद्यालय का वार्षिक सम्मेलन।

दृश्य एक, शिक्षा अधिकारी का कार्यालय। 'अच्छा, यदि तुम्हारा आग्रह ही है तो खुशी से एक साल तक अनुभव करो। प्राथमिक पाठशाला की चौथी कक्षा मैं तुम्हें सौंपता हूं। यह उसका पाठ्यक्रम है। ये उसमें चलने वाली कुछ पाठ्य-पुस्तकें हैं, ये शिक्षा विभाग के छुट्टी आदि के कुछ नियम हैं।....देखो, जैसे चाहो वैसे प्रयोग करने की स्वतंत्रता तो तुम्हें है ही, इसके लिए तो तुम आए ही हो। लेकिन यह भी ध्यान में रखना कि बारहवें महीने में परीक्षा सामने आ खड़ी होगी और तुम्हारा काम परीक्षा के परिणामों से मापा जाएगा। दृश्य दो, विद्यालय परिसर में परस्पर बातचीत करते शिक्षक गण। 'सच कहता हूं, मुझे तो आप एक अजीब आदमी मालूम पड़ते हैं। मैं मानता हूं कि आपका प्रयोग सफल हुआ है। हमें विश्वास नहीं होता था कि प्राथमिक शाला की पढ़ाई में भी कुछ सुंदर परिवर्तन किये जा सकते हैं।' दृश्य तीन, विद्यालय का वार्षिक सम्मेलन।

'सज्जनो! मैं नहीं जानता कि आज अपने आनंद को किस प्रकार व्यक्त करूं? आप इनकी कक्षा के इन विद्यार्थियों को देखिए। ये कितने व्यवस्थित, स्वस्थ और आनंदपूर्वक हैं। इनकी शक्ति और बुद्धि के विकास का मैं साक्षी हूं। इनके सम्बंध में बच्चों के माता-पिता को भी अपना संतोष व्यक्त करते हुए मैंने बार-बार सुना है।'

उक्त तीन कथन तीन अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा अलग-अलग समय और स्थितियों में प्राथमिक शिक्षा में नवल प्रयोग करने को उत्सुक-संकल्पित एक प्रयोगधर्मी व्यक्तित्व के लिए कहे गए हैं जो प्राथमिक शिक्षा को आनंदमय बनाने का पक्षधर है। पहला कथन एक शिक्षा अधिकारी का है जो उस व्यक्ति को आवश्यक निर्देश देते हुए शैक्षिक प्रयोग करने की अनुमति देते हैं। दूसरा कथन व्यक्ति के सहकर्मी शिक्षकों के आपसी वार्तालाप का है और तीसरा कथन शिक्षा विभाग के डायरेक्टर साहब का है जो उस व्यक्ति के विद्यालय में आयोजित बच्चों के वार्षिक सम्मेलन में उनके शैक्षिक प्रयोगों की सफलता की सराहना करते हुए उपस्थित अभिभावकों के सम्मुख कहा गया है। पाठक मन ही मन सोच रहे होंगे कि मैने लेख के आरंभ में ही ये तीन कथन क्यों रखे और यह जिज्ञासा भी पनपी होगी कि वह प्रयोगधर्मी व्यक्तित्व कौन है जो प्राथमिक शिक्षा की बेहतरी के लिए आनंददायी नवाचारी प्रयोग करने को उत्सुक-आतुर एवं कटिबद्ध है। चलिए मिलाता हूं, वह महनीय व्यक्तित्व है गिरिजाशंकर भगवानदास बधेका, जिसे विश्व गिजुभाई बधेका के नाम से जानता है। शिक्षाविदों की पंक्ति में गिजुभाई ध्रुवतारे की भांति दैदीप्यमान हैं। गिजुभाई शैक्षिक विचारक के रूप में मुझे सर्वाधिक प्रिय हैं क्योंकि वह शिक्षा की जमीनी वास्तविकता से न केवल परिचित हैं अपितु उसे बेहतर करने के सरल सर्वमान्य तौर-तरीके भी प्रस्तुत करते हैं। बदलाव का खुशियों भरा रास्ता दिखाते हैं। उनके विचार कागजी नहीं हैं बल्कि प्रयोग एवं अनुभव की भट्टी में तपकर निकले हैं। जीवन संघर्ष की आंच से उत्पन्न ऊष्मा से ऊर्जावान हैं। वह शैक्षिक मुद्दों पर अपनी बात कहने के लिए शब्दों का चमत्कारिक वैचारिक वितान नहीं तानते बल्कि स्वयं करके एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, क्योंकि वह मानते हैं कि बच्चे बड़ों को कार्य करता हुआ देखकर और स्वयं करके सीखते हैं। वास्तव में गिजुभाई उस शिक्षा साधक का नाम है जो शिक्षा में प्रचलित दकियानूसी परम्पराओं, जड़ता, सीख-उपदेशपरक रटन्त शिक्षा प्रणाली एवं संवेदनहीन नीरस उबाऊ विद्यालयीय माहौलसे जूझता है। अपने बाल हितैषी जमीनी प्रयोगों से उन्होंने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को एक नवीन दिशा देकर बालकेंद्रित, संवेदनशील एवं चेतनापरक बनाने का प्रयत्न किया है। अपने शैक्षिक अनुभवों को 'लक्ष्मीशंकर' नामक काल्पनिक शिक्षक पात्र के द्वारा पुस्तक 'दिवास्वप्न' में अंकित किया है। लेख के आरंभ के तीन कथन 'दिवास्वप्न' से ही लिए गए हैं। आइए! गिजुभाई बधेका के बारे में जानते हैं।

गिजुभाई बधेका का जन्म 15 नवंबर, 1885 को चित्तल सौराष्ट्र (अब गुजरात) में हुआ था। मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करके आपको धनार्जन हेतु काम करना पड़ा। इस हेतु अफ्रीका का भी प्रवास किया। भारत लौटकर कुछ समय वकालत का काम भी किया। इसी दौरान अपने बच्चे के लिए एक ऐसे स्कूल की खोज शुरू की जहां बच्चा आनंदमय परिवेश में निर्भय एवं बाधामुक्त हो ज्ञानार्जन कर सके। पर मनपसंद स्कूल न मिल पाने से निराश हुए और तत्कालीन प्रचलित शिक्षण पद्धतियों का अध्ययन कर उच्च न्यायालय के वकील गिजुभाई ने वर्ष 1916 में भावनगर के दक्षिणामूर्ति बाल मंदिर में अपने शिक्षा संबंधी प्रयोग आरंभ किए थे। 'बालदेवो भव' उनका मंत्र था। वह विद्यालय का परिवेश बालमैत्रीपूर्ण, संवेदनशील और बच्चों के लिए आनंद में सीखने की जगह के रूप में बनाने के हिमायती थे। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा में भाषा, गणित, इतिहास एवं भूगोल आदि विषयों को पाठ्यक्रम एवं पाठ्य-पुस्तकों में दर्ज सूचनाओं के रूप से मुक्त कर प्रयोग के आंगन की रुचिपूर्ण विषय वस्तु बना दिया। वह पाठ्य प्रश्नोत्तरों को रटने की बजाय परिवेश में उपलब्ध संसाधनों के उचित प्रयोग, अवलोकन, तर्क, तुलना, अनुमान, परस्पर सम्बंध खोजने, समझने और स्वयं की भावाभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं। वह गीत, कविता, कहानी, संगीत, नाटक, नृत्य, खेल, स्थानीय भ्रमण आदि तरीकों को शिक्षण में प्रयोग करते हैं। इन प्रयोगों के परिणाम विश्वास जगाते हैं और बच्चों के सीखने-समझने की यात्रा सुखद एवं आनंददायी बनाते हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा- 2005, शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 एवं नई शिक्षा नीति-2020 में गिजुभाई के शैक्षिक प्रयोग एवं विद्यालयों के परिवेश को आनंदमय बनाने की पैरवी का प्रभाव स्पष्ट दृष्टव्य है। पुस्तकालय, वाचनालय और विद्यालय एवं विद्यार्थियों की स्वच्छता को वह वरीयता देते दिखते हैं। वह बच्चों की पिटाई या सजा पर सख्त विरोध व्यक्त करते हैं। वह बच्चों को उनके कक्षा-कक्ष की साज-सज्जा की जिम्मेदारी देकर उन्हें दायित्व बोध कराते हैं। 23 जून, 1939 को उनका निधन हुआ।

यह देश का दुर्भाग्य है कि गिजुभाई बधेका जैसे शिक्षाविद् को वह महत्व, सम्मान और पहचान नहीं मिल सकी और उनके शैक्षिक प्रयोगों को आगे नहीं बढ़ाया गया जिसके वह सर्वथा हकदार थे। गिजुभाई बधेका शिक्षा के क्षेत्र में जमीनी काम करने वाला वह शिक्षा साधक हैं जो अपने समय से एक सदी आगे का दृश्य देख रहे थे। विभिन्न बाधाओं से टकराते और चुनौतियों से जूझते एक ऐसे आनंदमय विद्यालयीय परिवेश को साकार करने का स्वप्न संजोया, जहां बच्चे निर्भय होकर अपने ज्ञान की सर्जना कर सकें। जहां सूचनाओं के रटने के दबाव से मुक्त हो बच्चे अपने अनुभवों को परस्पर साझा कर नित नवल ज्ञान की साधना-आराधना कर सकें। जहां बच्चों को अभिव्यक्ति के स्वतंत्र मुखर अवसर हों। जहां वे प्रकृति एवं प्राणी से रिश्ता जोड़ सकें। जहां सामूहिकता, सहकार एवं समन्वय का भाव ग्रहण कर सकें। बच्चे सहृदय, संवेदनशील, जिम्मेदार एवं प्रकृतिप्रेमी बनें, ऐसा गिजुभाई चाहते थे। एक शिक्षक एवं अभिभावक के रूप में हम बच्चों के 'दिवास्वप्न' की दिशा में सतत बढ़ने में सहायक बनें, यही गिजुभाई बधेका के प्रति हमारी श्रद्धांजलि होगी।

आधुनिकता का चश्मा और गांव का चंदन

वक्रोक्ति

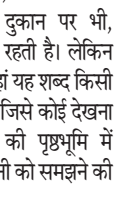

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा उरतृप्त

लेखक व्यंग्यकार हैं।

हर जगह एक आवाज़ सुनाई देती है– 'आधुनिकता'। यह शब्द अब हर किसी के मुंह में बसा हुआ है। टीवी पर, सोशल मीडिया पर, यहाँ तक कि चाय की दुकान पर भी, 'आधुनिकता' की चर्चा चलती रहती है। लेकिन जब आप गांवों में जाते हैं, तो वहां यह शब्द किसी पुराने जूते की तरह पड़ा रहता है, जिसे कोई देखना नहीं चाहता। आज हम गांव की पृष्ठभूमि में आधुनिकता की इस अद्भुत कहानी को समझने की कोशिश करते हैं।

गांव का नाम लें, और वहां के लोग अपने छोटे-छोटे कामों में लगे रहते हैं। एक तरफ जहां शहरों में लोग फैंसी कपड़ों में घूमते हैं, वहीं गांव में चंदन की खुशबू और धूल भरे कपड़े हैं। गांव के प्रधान जी, जिन्हें लोग 'सर्वशक्तिमान' मानते हैं, हमेशा कहते हैं, 'हमारी पहचान हमारी परंपरा है।' लेकिन जब चुनाव का समय आता है, तो वे आधुनिकता का चश्मा पहनकर शहर के नेताओं के पीछे दौड़ते हैं।

गांव में एक मुहावरा है, 'जो कुत्ता भौंका, वही बकरा बना।' इस मुहावरे का सीधा सा अर्थ है कि जो बोलता है, वही चलता है। गांव में एक नया 'बुद्धिजीवी' आया है, जिसने शहर से पीएचडी की है। उसने गांव वालों को बताया कि 'अब आपको अपने कामों को डिजिटल करना होगा।' गांव वाले एक-दूसरे की शक्लें देखने लगे, जैसे कोई विदेशी प्रजाति का जीव सामने आ गया हो।

बुद्धिजीवी ने गांव में एक बैठक बुलाई। उसने सभी को बताया कि उन्हें अब हर काम में स्मार्टफोन का इस्तेमाल करना होगा। 'आपको अपने खेतों में भी ऐप्स का इस्तेमाल करना पड़ेगा,' उसने कहा। गांव वालों ने एक-दूसरे को देखा और सिर खुजाने लगे। 'भाई, हमारे खेत तो हैं, पर यह ऐप्स कहां से लाएंगे?'

बुद्धिजीवी ने हंसते हुए कहा, 'आपको बस कुछ पैसे खर्च करने होंगे। सब कुछ आसान है।' गांव वाले सोचने लगे कि पैसे खर्च करने से तो हज़ारों साल पुरानी परंपराएं खत्म हो जाएंगी। लेकिन फिर भी, उनका डर कुछ कम हुआ।

बुद्धिजीवी ने गांव में एक कंप्यूटर क्लास शुरू की। पहले दिन सभी ने हाजिर होकर सिखने की कोशिश की। पर जब उन्हें बताया गया कि 'क्लिक' कैसे करना है, तो आधे गांव के लोग चकरा गए। एक बुजुर्ग ने कहा, 'बेटा, जब से मैंने खेती शुरू की है, मैंने कभी चूहों के साथ खेलने की कोशिश नहीं की। अब यह चूहा बड़ा हो गया है!'

धीरे-धीरे गांव में शहरीकरण शुरू हो गया। एक दिन गांव में एक युवती आई, जिसने कहा, 'आपको अब सोशल मीडिया पर आना पड़ेगा।' गांव वालों ने फिर से एक-दूसरे को देखा, जैसे वे किसी जादुई जुगाड़ के बारे में सुन रहे हों।

युवती ने उन्हें बताया कि उनके लिए एक फेसबुक पेज बनाना जरूरी है। 'आपकी ताज़ी सब्जियों की तस्वीरें डालें, लोग पसंद करेंगे!' उसने उत्साह से कहा। गांव वाले सोचने लगे कि जब सब्जियां ही गंदगी में पड़ी रहती हैं, तो कैसे कोई उन्हें पसंद करेगा?

समय बीतता गया, और गांव में लोग स्मार्टफोन और ऐप्स के पीछे भागने लगे। सब्जियों की खेती में तो सब कुछ ठीक रहा, लेकिन अब लोग खेतों में भी अपनी selfies लेने लगे। 'किसान की आत्मा' अब स्मार्टफोन में समा गई थी।

आधुनिकता का चश्मा पहने लोग यह भूल गए थे कि गांव की असली खूबसूरती उसकी सादगी में है। जब गांव में पानी की समस्या बढ़ी, तो किसी ने भी 'स्मार्ट सिटी' बनाने की नहीं सोची। सब्जियां उगाने के लिए स्मार्ट तरीके तो अपना लिए, लेकिन पानी के लिए किसी ने भी 'ऐप' नहीं बनाया।

गांव की पंचायत ने फैसला किया कि गांव को स्मार्ट बनाना है, लेकिन गांव की असली समस्या को सुलझाने में सब चुप रहे। अब, आधुनिकता की इस दौड़ में गांव का चंदन कहीं खो गया है।

आधुनिकता का चश्मा पहनकर हम सभी को देखना चाहिए कि कहीं यह चश्मा हमारी परंपरा को धुंधला तो नहीं कर रहा है। एक दिन गांव में एक बूढ़ा आदमी बोला, 'भाई, जो चश्मा हमारी आँखों को धुंधला कर दे, वह कितना भी स्मार्ट हो, हमें उसे उतार देना चाहिए।'

और सच में, हमें यह समझना होगा कि आधुनिकता का चश्मा पहनने से पहले हमें अपनी जड़ों को नहीं भूलना चाहिए।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

रामविलास जांगिड़

लेखक व्यंग्यकार हैं।

जीरो टका की जुमला गारंटी

बेताल ने चुनावी सभा में खंभे पर लटकते हुए कहा, 'राजा विक्रम, तुम्हें एक ऐसा रहस्य बताने जा रहा हूं, जिसे सुनकर तुम्हारी चुनावी समझ गहरी हो जाएगी। सुनो, ये कहानी है 'मोहब्बत की दुकान, गठबंधन की जोड़ी चार, जुमलों का बाजार, और सौ टका का गारंटी' की। इन मंत्रों में ही छुपी है आज के नेता की असली चाल।' विक्रम ने मुस्कुराते हुए कहा, 'बोलो बेताल, ये मोहब्बत की दुकान से चुनाव का क्या संबंध है?'

बेताल ने चुनावी गारंटी के पोस्टर के आगे अपना हाथ नचाते हुए कहा, 'सम्बंध गहरा है, हे राजन! चुनावी माहौल में मोहब्बत की दुकान बहुत ही महत्वपूर्ण है। समझो, जब नेता जनता से मिलने निकलते हैं, तो उनके चेहरे पर एक झूठी मोहब्बत का नकाब होता है। मोहब्बत की दुकान चलाने का सबसे बड़ा हुनर है, जिससे जनता नेता के झूठे वादों पर भरोसा करने लगती है।' विक्रम ने सिर हिलाया और कहा, 'तुम्हारी बात में दम है। अब बताओ यह 'गठबंधन की जोड़ी चार' क्या है?'

बेताल ने रहस्यमयी अंदाज में कहा, 'हे राजन, गठबंधन भी एक अद्भुत खेल है। जब चुनाव पास आते हैं, तो नेता सोचते हैं कि अकेले काम नहीं चलेगा, तो अपने प्रतिद्वंद्वियों से हाथ मिला लेते हैं। गठबंधन एक ऐसा विवाह है, जिसमें दोनों पक्ष अपनी-अपनी कुर्सी के लालच में एक-दूसरे से 'मोहब्बत' दिखाते हैं। इसमें वे लोग साथ आते हैं, जो चुनाव से पहले एक-दूसरे को कोसते रहते हैं। चुनावी जोड़ी चार लोग बना लेते हैं, फिर हाथ में हाथ डालकर कहते हैं, 'देश का विकास हमारे हाथों में है।' और चुनाव बाद, यह जोड़ी टूट जाती है, जैसे शादी के तुरंत बाद झगड़े का आगाज।' विक्रम हंसी रोकते हुए बोला, 'तो गठबंधन की यह जोड़ी भी एक छलावा है?'

बेताल ने मुस्कुराते हुए कहा, 'हां राजन! हां! सब कुछ छलावा है, और सुनो! जुमलों का बाजार तो सबसे मजेदार है। चुनावी मौसम में हर नेता एक 'सुपरमार्केट' बन जाता है, जहां जुमले एकदम ताजे और चमचमाते मिलते हैं। जैसे, 'अच्छे दिन आएंगे', 'हर घर नौकरी', 'हर हाथ में पैसा'। ये जुमले ऐसे हैं, जिनकी न कोई मियाद होती है, न कोई गारंटी। जनता जुमलों के इस बाजार में आकर खुश हो जाती है और अपनी मर्जी का चुनावी वादा खरीद लेती है। नेता लोग जानते हैं कि चुनावी समय में थोड़ी सी चिकनी-चुपड़ी बातों से जनता मंत्रमुग्ध हो जाएगी। जनता भी सुनती है और कहती है, 'वाह! नेता जी क्या कह रहे हैं।' और बाद में वही जनता अपना सिर पकड़ लेती है।' विक्रम ने ठहाका लगाते हुए कहा, 'बेताल, तुम सही कह रहे हो। और ये 'सौ टका का गारंटी' क्या चक्कर है?'

बेताल ने गंभीरता से कहा, 'हे राजन, यह चुनावी दुनिया का सबसे बड़ा छल है। नेता कहते हैं, 'हम सौ टका का गारंटी देते हैं कि हम जो कह रहे हैं, वही करेंगे।' लेकिन असल में यह गारंटी केवल चुनावी भाषण तक सीमित होती है। चुनाव के बाद ये गारंटी 'जीरो टका की जुमला गारंटी' बन जाती है। जैसे ही नेता कुर्सी पर बैठते हैं, तो उन्हें अपनी गारंटी का मतलब ही समझ में नहीं आता। वे सबकुछ भूल जाते हैं और जनता देखती रह जाती है।'

पुण्यतिथि पर विशेष

विवेक कुमार साव

लेखक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के शोधार्थी हैं।

गीताई मंदिर : सर्वोदय की भावना का प्रतीक

विनोबा जी ने द्रविड शास्त्री की मराठी गद्य अर्थ की पुस्तक लायी, लेकिन उनकी माँ को वह पसंद नहीं आयी। उन्होंने कहा कि गद्य से पद्य पढ़ना आसान होगा। वामन पंडित का गीता का मराठी अनुवाद 'समश्लोकी गीता' उपलब्ध था, लेकिन वह भी उनकी माँ को ठीक नहीं लगा। तब विनोबा जी की माँ ने उनसे कहा कि वह स्वयं गीता का मराठी में सरल पद्यानुवाद करें। विनोबा जी ने इस बात को स्वीकार किया और गीताई की रचना की। विनोबा भावे की इसी अमूल्य कृति गीताई की स्मृति को संजोए रखने के लिए, श्री कमलनयन बजाज ने एक अद्वितीय परिकल्पना को साकार करने का निर्णय लिया - गीताई मंदिर की स्थापना। इस परिकल्पना को विनोबाजी ने स्वीकार भी किया।

विनोबा जी के जीवन में एक महत्वपूर्ण घटना घटी, जिसने उनकी गीताई की रचना को प्रेरित किया। यह घटना करीब 1915 की है, जब विनोबा जी की माँ रुक्मिणी जी बडौदा में एक प्रवचनकार के प्रवचन सुनने जाती थीं। वह गीता पर प्रवचन करते थे, लेकिन उन्हें बेहतर कुछ समझ नहीं आता था। तत्पश्चात, उन्होंने विनोबा जी से कहा कि वह मराठी में गीता की पुस्तक लाएं। विनोबा जी ने द्रविड शास्त्री की मराठी गद्य अर्थ की पुस्तक लायी, लेकिन उनकी माँ को वह पसंद नहीं आयी। उन्होंने कहा कि गद्य से पद्य पढ़ना आसान होगा। वामन पंडित का गीता का मराठी अनुवाद 'समश्लोकी गीता' उपलब्ध था, लेकिन वह भी उनकी माँ को ठीक नहीं लगा। तब विनोबा जी की माँ ने उनसे कहा कि वह स्वयं गीता का मराठी में सरल पद्यानुवाद करें। विनोबा जी ने इस बात को स्वीकार किया और गीताई की रचना की। विनोबा भावे की इसी अमूल्य कृति गीताई की स्मृति को संजोए रखने के लिए, श्री कमलनयन बजाज ने एक अद्वितीय परिकल्पना को साकार करने का निर्णय लिया - गीताई मंदिर की स्थापना। इस परिकल्पना को विनोबाजी ने स्वीकार भी किया।

विनोबाजी और गीताई की स्मृति में एक स्थायी स्मारक की स्थापना करने की इच्छा श्री कमलनयन बजाज जी की थी, जो उनके विनोबा जी के शिष्यत्व काल से ही रही। इस विचार को आगे बढ़ाते हुए, उन्होंने जमनालालजी के लिए भी ऐसा स्मारक बनाने की कल्पना की। कमलनयनजी चाहते थे कि स्मारक गांधीजी, विनोबाजी और जमनालालजी के जीवन-दर्शन और व्यक्तित्व के अनुकूल हो, जो सुंदर भी हो, सादा भी हो, प्रेरणादायक के साथ-साथ कलापूर्ण भी हो। उन्होंने गीताई मंदिर की कल्पना को, जो नवीन व मौलिक थी, श्री विनायक पुरोहित के सहयोग से पूरा खाका तैयार किया। इसके बाद, उन्होंने विभिन्न स्मारकों का अवलोकन व स्थापत्य कला के विशेषज्ञों से परामर्श कर प्रारूप को और अधिक स्पष्ट किया। विनोबा जी की सहमति से जमनालाल जी के 75वें जन्मदिन 4 नवंबर 1964 को स्वयं विनोबाजी ने इसका भूमिपूजन किया।

इसके बाद, बादशाह खान अब्दुल गफ्फारखां के करकमलों द्वारा गीताई मंदिर का शिलान्यास, भूमि पूजन के पांच वर्षों बाद 4 नवंबर 1969 को हुआ। गीताई मंदिर नाम से आपको शायद देवी-देवताओं की मूर्तियों से सजे एक पारंपरिक मंदिर की कल्पना होगी, लेकिन यहाँ आपको गर्भगृह, छत या मूर्तियाँ नहीं मिलेगी, बल्कि इसकी जगह भारत के चारों कोनों से लाए गए अठारह प्रकार के पत्थरों के स्लैब पर गीताई के अठारह अध्यायों को उकेरा गया है। यह स्मारक राष्ट्रीय एकता और अखंडता का प्रतीक है, जो गांधीजी, विनोबाजी और जमनालालजी के आदर्शों को संरक्षित करता है। गीताई मंदिर की विशेषता इसकी अनूठी वास्तुकला में भी है,अगर इसे कोई ऊपर से देखे तो उसकी संरचना चरखे और गाय की मिश्रित आकृति को दर्शाती है। चरखा गांधी जी के आत्मनिर्भरता व स्वावलंबन के सिद्धांत का प्रतीक है, जबकि गाय जमनालालजी के ग्रामीण विकास व सामाजिक न्याय के कार्यों की प्रतीक है। ये दोनों प्रतीक मंदिर की वास्तुकला में समाहित होकर एक अद्वितीय और अर्थपूर्ण संरचना बनाते हैं।

मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार से प्रवेश करने पर, स्वस्तिक के आकार में बने स्तंभ पर विनोबाजी की हस्तलिपि में गीताई के प्रति उनके भाव अंकित है - 'गीताई माऊली माझी तिचा मी बाळ नेणता। पडतां रडतां घेई उचलूनि कडेवरी।' इसका अर्थ है - गीताई मेरी माता है और मैं उसका नन्हा बालक। जब मैं गिरता हूँ और रोता हूँ तो वह मुझे उठाकर गोद में ले लेती है। यह वाक्य विनोबाजी की गीताई के प्रति गहरी श्रद्धा और भक्ति को दर्शाता है, जो उन्हें गीताई की मातृत्व भावना से जोड़ता है। इसी स्तंभ पर विनोबाजी का विश्व संदेश 'सत्य-प्रेम-करुणा' और गीताई का एक शब्द में सार 'साम्ययोग' भी अंकित है, जो मानवता के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश है। यह मंदिर एक अद्वितीय साधना-मंदिर के समान है, जो पारंपरिक पूजा के रीति-रिवाजों से परे एक शांत और सात्विक वातावरण प्रदान करता है, जिसे हम ध्यान, चिंतन और आत्म-शोधन के लिए एक आदर्श स्थल कह सकते हैं। कमलनयनजी की आत्मीय इच्छा थी कि उनकी भस्मी गीताई मंदिर में एक ऐसे पवित्र स्थल पर स्थापित की जाए जहाँ दर्शनार्थियों की पवित्र चरणरज निरंतर उस पर पड़ती रहे। अतः उनकी श्रद्धा और समर्पण की भावना को साकार किया जा सके, इसी उद्देश्य से उनकी भस्मी मंदिर के प्रवेशद्वार की सुरंगनुमा सीढ़ी के नीचे स्थापित की गई है, जो उनकी विनम्रता, समर्पण और आत्मोत्सर्ग की भावना का प्रतीक है। गीताई-मंदिर की रूपरेखा एक विशिष्ट स्मारक की परिकल्पना प्रस्तुत करती है, जिसका उद्देश्य किसी एक व्यक्ति की स्मृति को संरक्षित करने के बजाय, सर्वोदय विचारधारा और इसके विश्वास से जुड़े लोगों के जीवन की स्मृति को बनाये रखना है। कमलनयनजी बजाज ने इस स्मारक की रूपरेखा में सात महत्वपूर्ण तत्व शामिल बताया - वह धार्मिक पृष्ठभूमि जिसने गांधी-विचार और उसके अनुकूल पावन जीवन को पनपाया, समग्र भारतीय उपद्वीप में सर्वोदयी विचारधारा का प्रभावपूर्ण विस्तार, ग्राम्य अंचलों के खुलेपन का स्थापत्य में समावेश, भारतीय ग्रामीण जीवन में खटकते हुए अभाव को दूर करने वाला भाव, सृष्टि-सौंदर्य और प्रचुरता के वातावरण का कलापूर्ण कृति द्वारा दिग्दर्शन, सर्वोदय कार्यक्रम से जुड़ी खुरदुरी और ग्रामीण बुनावट बिल्कुल खद्दर की तरह तथा गांधी जीवन की सर्वविदित पवित्रता, सरलता, नम्रता, सादगी, खुलापन और दृढ़ता है। अतः गीताई मंदिर एक ऐसा स्मारक है जो सर्वोदय विचारों को प्रतिबिंबित करता है, जो गांधी जी के आदर्शों और विनोबाजी के विचारों का प्रतीक है। इस मंदिर में विनोबाजी द्वारा रचित 'गीताई' के श्लोकों को शिलाओं पर अंकित किया गया है, जो देश में अपनी तरह का पहला प्रयास है, जहाँ एक संपूर्ण मराठी ग्रंथ को शिलाओं पर उकेरा गया है। इस मंदिर में गीताई के 18 अध्यायों के लिए 18 प्रकार के शिलाखंडों का उपयोग किया गया है, जो देश की चारों दिशाओं से लाए गए थे। इन शिलाखंडों का चयन विशेषज्ञों की राय व प्रमाणित प्रयोगों के आधार पर किया गया था, ताकि इन पर प्रकृति के संभावित परिणामों का प्रभाव कम से कम पड़े। मंदिर की विशेषताओं में से एक यह भी है कि शिलाखंडों का आकार निश्चित किया गया है, जिससे प्रत्येक शिलाखंड की ऊंचाई 9 फुट, चौड़ाई 2 फुट और मोटाई 1 फुट हैं। ये दो फुट जमीन के अंदर कांक्रीट में गाड़े हुए हैं तथा इन पत्थरों को जहाँ तक हो सके अपने स्वाभाविक रूप में खुरदरा ही रखा गया है, जो सर्वोदय कार्यक्रमों में जुड़ी सादगी व ग्रामीण बनावट का प्रतीक है। यह मंदिर देश की दृढ़ एकता का प्रतीक है, जिसमें विभिन्न राज्यों के पत्थरों का उपयोग किया गया है। इस प्रकार, गीताई-मंदिर एक ऐसा अद्वितीय स्मारक है, जो गांधीजी, विनोबाजी, जमनालालजी के विचारों और आदर्शों को संरक्षित करता है तथा देश की एकता का प्रतीक बन जाता है।

स्मृति शेष : डॉ. देवेंद्र जोशी

डॉ. हरीशकुमार सिंह

अवंतिका के सांस्कृतिक वैभव का गायक चला गया

ओजस्वी कवि, प्रखर वक्ता, सम्पादक, शोधकर्ता के साथ साथ देवेन्द्र जी एक लोकप्रिय शिक्षक भी थे। वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. देवेन्द्र जोशी जी विगत पैंतालीस वर्षों से लगातार लेखन कर रहे थे। सिंहस्थ पर उनकी एक महत्वपूर्ण पुस्तक आई 'उज्जयनी का सांस्कृतिक वैभव और सिंहस्थ 2016' जिसमें सिंहस्थ और उज्जैन को लेकर महत्वपूर्ण शोध हैं। आपकी पैंतीस से अधिक पुस्तकें विभिन्न विषयों पर प्रकाशित हैं। वर्ष 2020 में एक वर्ष में देवेन्द्र जी की बारह पुस्तकों का प्रकाशन उनकी रचनात्मकता की मिसाल रही। आप मध्यप्रदेश लेखक संघ उज्जैन के सचिव थे। दैनिक उज्जैन सांदीपनी के आप प्रधान सम्पादक थे। उज्जैन में रहकर आप कई महत्वपूर्ण समाचार पत्रों से जुड़े रहे और एक लंबा अनुभव आपको पत्रकारिता का रहा है।

प्रख्यात पत्रकार और साहित्यकार डॉ. देवेन्द्र जोशी का बासठ वर्ष की आयु में असामयिक निधन 10 नवम्बर को उज्जैन में ब्रेन हेमरेज से हो गया। उज्जैन को अपनी कर्मभूमि बनाने वाले देवेन्द्र जी का निधन नगर की साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत की अपूरणीय क्षति है क्योंकि अवंतिका के सांस्कृतिक वैभव को अपनी लेखनी से देश,विदेश में फैलाने वाले वे सच्चे लेखक थे। अपनी कई पुस्तकों में देवेन्द्र जी ने उज्जयिनी के अतीत, इतिहास और धार्मिक संस्कृति को प्रमुखता से स्थान दिया। ओजस्वी कवि, प्रखर वक्ता, सम्पादक, शोधकर्ता के साथ साथ देवेन्द्र जी एक लोकप्रिय शिक्षक भी थे। वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. देवेन्द्र जोशी जी विगत पैंतालीस वर्षों से लगातार लेखन कर रहे थे। सिंहस्थ पर उनकी एक महत्वपूर्ण पुस्तक आई 'उज्जयनी का सांस्कृतिक वैभव और सिंहस्थ 2016' जिसमें सिंहस्थ और उज्जैन को लेकर महत्वपूर्ण शोध हैं। आपकी पैंतीस से अधिक पुस्तकें विभिन्न विषयों पर प्रकाशित हैं। वर्ष 2020 में एक वर्ष में देवेन्द्र जी की बारह पुस्तकों का प्रकाशन उनकी रचनात्मकता की मिसाल रही। आप मध्यप्रदेश लेखक संघ उज्जैन के सचिव थे। दैनिक उज्जैन सांदीपनी के आप प्रधान सम्पादक थे। उज्जैन में रहकर आप कई महत्वपूर्ण समाचार पत्रों से जुड़े रहे और एक लंबा अनुभव आपको पत्रकारिता का रहा है। जयभारती महाविद्यालय के आप वर्तमान में प्राचार्य थे।

डॉ. देवेन्द्र जोशी ने अपनी लेखन यात्रा एक पत्रकार के रूप में वर्ष 1979 में समाचार पत्र दैनिक ब्रिगेडियर से की थी और नगर के सांस्कृतिक आयोजनों की रिपोर्ताज कर चर्चित हुए। डॉ. देवेन्द्र जोशी जी ने साहित्य की लगभग हर विधा में पुस्तकें लिखीं। आपके कविता संग्रहों में - कड़वा सच, आखिर क्यों, रंग रंगीलो मालवो, अंतस का उजाला सम्मिलित हैं। आपके ललित निबंध संग्रह में - सदी के सितारे, तन रागी मन बैरागी, अयोध्या में राम की वापसी, बदलता परिदृश्य प्रकाशित हैं। आपके शोध ग्रंथों में - साक्षरता एक जरुरत, राष्ट्रमाता कस्तूरबा, देवगुरु ब्रहस्पति, आजाद के अनछुए पहलु सम्मिलित है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की मन की बात पर आधारित ग्रन्थ - जन गण मन की बात, में आपके आलेख संकलित हैं जो प्रधानमंत्री जी की मन की बात के विभिन्न संस्करण पर हैं। आप एक श्रेष्ठ व्यंग्यकार भी रहे और आपका एक व्यंग्य संग्रह - लोकतंत्र मेरे बाप की बपौती सामने आया। मालवा माटी के सपूतों पर, उज्जैन की पत्रकारिता पर और उज्जैन के सिंहस्थ और उज्जैन की महिमा पर सांस्कृतिक ग्रंथों और

पुस्तकों का प्रकाशन किया। आजादी की 75वीं वर्षगाठ पर हिन्दी सिनेमा पर आपकी पुस्तक सिनेमा की देश भक्ति आई तो सदी के महानायक अमिताभ पर ' बेमिसाल पचास साल ' पुस्तक लिख डाली। आजादी के लड़ाकों पर आपने लिखा तो राष्ट्रकवि श्रीकृष्ण सरल को भी अपनी लेखनी से याद किया। रेडियो रूपक, यात्रा वृतान्त, यात्रा वर्णन और रिपोर्ताज लेखन में हाल में ही आपकी पुस्तक 'यात्रा संस्मरण' प्रकाशित हुई थी और सबसे बड़ी बात यह है कि इस पुस्तक को विश्व साहित्य सेवा ट्रस्ट आगरा द्वारा वर्ष की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक के लिए चयन किया गया। आपके पांच हजार से अधिक आलेख विभिन्न विषयों पर विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए। आप एक कुशल संचालक कई महत्वपूर्ण साहित्यिक आयोजनों के संयोजक और सूत्रधार रहे।

एक पत्रकार के रूप में आपने छतरपुर, शिवपुरी,मांडू, नासिक, भिंड, मुरेना आदि की यात्राएँ की और आपने इन सब पर लिखा है। महत्वपूर्ण यह है कि तब जनसंपर्क विभाग और कलेक्टर मिलकर पत्रकारों के लिए ऐसी यात्राएँ संयोजित करते थे और जहाँ जहाँ पत्रकार जाते थे उनकी सुख सुविधाओं का ध्यान रखते थे और कई स्थान पर स्वयं कलेक्टर पत्रकारों से मिलने आते थे और उनका ख्याल रखते थे। पत्रकारिकता के उस स्वर्णिम दौर में पत्रकारों का कितना मान था। वर्ष 1992 से आपने अपने संपादन में दैनिक उज्जैन सांदीपनी का प्रकाशन आरम्भ किया जो अब तक जारी है। आपको अखिल भारतीय लोकभाषा कवि सम्मान, आंचलिक पत्रकार सम्मान, नटवरलाल स्नेही साहित्य सम्मान, मध्यप्रदेश लेखक संघ का प्रतिष्ठित सम्मान सहित कई सम्मान प्राप्त हुए। आकाशवाणी और दूरदर्शन से आपकी रचनाएं प्रसारित होती रहीं। मालवी बोली और भाषा के उन्नयन और संवर्धन के लिए डॉ. देवेन्द्र जोशी ने मालवी में पुस्तकें लिखीं और मालवी कवि सम्मलेन और कविता के लिए आन्दोलन चलाये। आजादी के बाद के नगर के भूले बिसरे आयोजनों, साहित्यकारों,पत्रकारों और परम्पराओं की उन्हें बहुत जानकारी थी और इन पर वे यदा कदा लिखते रहते थे। डॉ. देवेन्द्र जोशी की पत्रकारिता मानव मूल्यों की जमीनी पत्रकारिता थी और दबंग पत्रकारिता की वे मिसाल थे। मालवा भूमि के कर्मठ पत्रकार और साहित्यकार को विनम्र नमन।

जनजातीय गौरव दिवस के प्रसंग

लोकेन्द्र सिंह

लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

जनजातीय गौरव को बढ़ावा देने में अग्रणी मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश वह राज्य है, जिसकी पहल पर देश को 'जनजातीय गौरव दिवस' मिला है। यह बात तो हर कोई मानता है कि मध्यप्रदेश की सरकार ने जनजातीय नायकों का गौरव बढ़ाने के लिए उनसे जुड़े स्मारकों का आगे बढ़कर विकास किया है। राजा शंकरशाह और रघुनाथ शाह, रानी कमलापति, रानी दुर्गावती, टंट्या मामा और भीमा नायक से लेकर कई नायकों के योगदान से लोगों को परिचित कराने के उल्लेखनीय कार्य किए हैं। मंडला के मेडिकल कॉलेज का नाम बलिदानी हृदयशाह के नाम पर किया गया। वहीं, छिंडवाड़ा विश्वविद्यालय का नाम 'राजा शंकरशाह विश्वविद्यालय' किया। हबीबगंज रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर 'रानी कमलापति रेलवे स्टेशन' किया गया। जबलपुर में 100 करोड़ की लागत से 'रानी दुर्गावती स्मारक' को विकसित किया जा रहा है। जनजातीय गौरव को बढ़ाने के साथ ही जनजातीय समुदाय के उत्थान के लिए भी मध्यप्रदेश सरकार ने उल्लेखनीय कदम उठाए हैं। विगत 20 वर्षों में जनजातीय योजनाओं का बजट 1000 प्रतिशत बढ़ा है। मध्यप्रदेश पहला राज्य है, जहाँ जनजातीय समुदाय के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण के लिए पेसा कानून को लागू किया गया है। जनजातीय समुदाय से आनेवाली पहली महिला राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की गरिमामयी उपस्थिति में 15 नवंबर, 2022 को मध्यप्रदेश के 20 जिलों के 89 विकासखंडों को पेसा कानून की सौगात मिली।

मध्यप्रदेश के बजट का अध्ययन करें तो ध्यान आएगा कि 2003-04 में जनजातीय कार्य विभाग का बजट 746.60 करोड़ रुपये था। जनजातीय समुदाय के उत्थान के लिए संचालित योजनाओं को बजट की कमी का सामना न करना पड़े, इसके लिए भाजपा सरकार ने सबसे पहला काम यही किया कि जनजातीय कार्य

विभाग के बजट में लगातार बढ़ोतरी की। वर्ष 2003-04 के मुकाबले वर्ष 2023-24 में जनजातीय कार्य विभाग का बजट 1000 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 11,768 करोड़ रुपये का हो गया है। इस बजट का उपयोग जनजातीय वर्गों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, रोजगार एवं अन्य बुनियादी व्यवस्थाओं के साथ ही विकास कार्यों को गति देने में किया गया है। विद्यार्थियों को शिक्षा के समुचित अवसर एवं आर्थिक सहयोग के साथ ही सरकार की ओर से रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण भी दिलाया जा रहा है। कम्प्युटर कौशल सिखाने के साथ जनजातीय युवाओं को पुलिस और सेना में भर्ती का प्रशिक्षण देने का काम भी मध्यप्रदेश में किया जा रहा है। जनजातीय वर्गों के उत्थान एवं सशक्तिकरण के लिए आहार अनुदान योजना, सिकल सेल उन्मूलन मिशन, मुख्यमंत्री राशन आपके द्वार ग्राम, देवारण?य, अनुसूचित जनजाति ऋण विमुक्ति अधिनियम-2020, मिलेट मिशन, प्रधानमंत्री वन-धन योजना, आकांक्षा योजना, प्रतिभा योजना, आवास सहायता योजना, विदेश अध्ययन छात्रवृत्ति, प्री एवं पोस्ट मेट्रिक छात्रवृत्ति, अखिल भारतीय सेवाओं के लिए कोचिंग एवं प्रोत्साहन तथा जनजातीय लोक कलाकृतियों एवं उत्पादों की जीआई टैगिंग जैसे कदम मध्यप्रदेश में उठाए गए हैं।

जनजातीय गौरव दिवस पर यह अवश्य याद रखना चाहिए कि अभारतीय ताकतों ने अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र के अंतर्गत जनजातीय समुदाय को भ्रमित करने के लिए 9 अगस्त को 'वर्ल्ड इंडिजिनियस पीपल्स डे' को 'आदिवासी दिवस' कहकर भारत में बढ़ावा दिया गया, जबकि इस दिन का भारत और जनजातीय गौरव के साथ कोई संबंध नहीं है। वास्तव में यह तो दुःखद त्रासदी की शुरुआत का दिन है। ब्रिटिस सेना ने अमेरिका के मूल निवासियों का नरसंहार किया। बाद में, उसके अपराध बोध से मुक्त होने के लिए 'वर्ल्ड इंडिजिनियस पीपल्स डे' (International Day of the World's Indigenous Peoples) के रूप में 9 अगस्त को चुना गया। यहाँ यह भी ध्यान रखें कि वैश्विक षड्यंत्र के अंतर्गत ही 'वर्ल्ड इंडिजिनियस पीपल्स डे' का अनुवाद 'विश्व आदिवासी दिवस' के रूप में किया गया है। वास्तविकता यह है कि संयुक्त राष्ट्र ने अब तक 'इंडिजिनियस पीपल' (indigenous people) की स्पष्ट परिभाषा तक नहीं की है। यही कारण है कि जब 1989 में विश्व मजदूर संगठन द्वारा 'राइट्स ऑफ इंडिजिनस पीपल' कन्वेन्शन क्रमांक-169 घोषित किया गया, तब उसे विश्व के 189 में से केवल 22 देशों ने ही स्वीकार किया। इसका मुख्य कारण 'इंडिजिनस पीपल' शब्द की परिभाषा को स्पष्ट नहीं करना ही था।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने भारत माता के महान बेटे बिरसा मुंडा की जयंती (15 नवंबर) को 'जनजाति गौरव दिवस' के रूप में मान्यता देकर प्रशंसनीय कार्य किया है। जनजाति वर्ग के इस बेटे ने भारत की सांस्कृतिक एवं भौगोलिक स्वतंत्रता के लिए महान संघर्ष किया और बलिदान दिया। अपनी धरती की रक्षा के लिए उन्होंने विदेशी ताकतों के साथ जिस ढंग से संघर्ष किया, उसके कारण समूचा जनजाति समाज उन्हें अपना भगवान मानने लगा। उन्हें 'धरती आबा' कहा गया। भगवान बिरसा मुंडा न केवल भारतीय जनजाति समुदाय के प्रेरणास्रोत हैं बल्कि उनका व्यक्तित्व सबको गौरव की अनुभूति कराता है। इसलिए उनकी जयंती सही मायने में 'गौरव दिवस' है। जिस प्रकार भगवान बिरसा मुंडा ने विदेशी ताकतों के षड्यंत्रों से भारत को बचाया, उसी प्रकार उनकी स्मृति में मनाया जानेवाला जनजातीय गौरव दिवस भी हमें वर्तमान में चल रही साजिशों से बचाएगा और भारत के 'स्व' की स्थापना की प्रेरणा देगा।

एफएक्यू और भुगतान में देरी के झंझट से बचने के लिए किसानों ने मंडी का किया रूख

मंडी को मिल रहा समर्थन, समर्थन पर सिर्फ एक केन्द्र में 90 क्विंटल सोयाबीन की खरीदी

संजय द्विवेदी, बैतूल। सोयाबीन की समर्थन मूल्य में खरीदी शुरू हुए करीब 20 दिन का समय बीत चुका है, लेकिन अब तक मात्र 4 ही किसान उपज बेच पाये है। इसका कारण सोयाबीन में 12 प्रतिशत से ज्यादा नमी होना है। किसानों का कहना है कि अक्टूबर में हुई जोरदार बारिश ने किसानों के सपनों पर पानी फेर दिया। खेतों में तैयार खड़ी सोयाबीन फसल भीग गई। बार-बार बारिश होने से पूरी तरह फसल सूखने का समय नहीं मिला। इस कारण सोयाबीन में नमी ज्यादा है। दाना भी काला हो गया है, जो एफएक्यू क्वालिटी के मानक अनुसार नहीं है। गौरतलब रहे कि 25 अक्टूबर से समर्थन मूल्य में सोयाबीन की खरीदी शुरू हुई है। समर्थन मूल्य में सोयाबीन बेचने के लिए करीब 3184 किसानों ने पंजीयन भी कराया है, जबकि 14 किसानों ने स्लॉट बुक किया है, किन्तु अब तक सिर्फ चार ही किसानों से समर्थन मूल्य में सोयाबीन की खरीदी की गई है। अधिकारियों का कहना है कि एफएक्यू क्वालिटी के स्तर की उपज नहीं होने से किसानों से उपज नहीं खरीद पा रहे है। उपज में नमी होने से कम ही किसान केन्द्र पहुंच रहे है। अधिकारियों के मुताबिक जल्द ही समर्थन मूल्य में खरीदी की रफ्तार में तेजी आने की उम्मीद है।

एक केंद्र पर खरीदी, 14 केंद्रों पर नहीं खुला खाता- जिले में समर्थन मूल्य में सोयाबीन उपज खरीदी के लिए 15 खरीदी केन्द्र बनाये गये है। जिसमें से मात्र एक केन्द्र पर ही 90 क्विंटल उपज की खरीदी हुई है, जबकि 14 केन्द्रों पर सोयाबीन खरीदी का खाता भी नहीं खुल पाया है। जबकि जिले की कृषि उपज मंडी में रोजाना बड़ी संख्या में सोयाबीन बेची जा रही है। वह भी तब, जब कृषि उपज मंडियों में किसानों को समर्थन मूल्य से कम दाम मिल रहे है। किसानों के मुताबिक समर्थन मूल्य पर फेयर एवरेज क्वालिटी (एफएक्यू) के मापदंडों में सोयाबीन के सैंपल की जांच की जाती है। 12 प्रतिशत तक नमी वाला सोयाबीन समर्थन मूल्य पर ही तुल पाता है, इससे अधिक नमी होने पर सैंपल फेल कर दिये जाते है।

मक्के की बंपर आवक, सोयाबीन भी पहुंच रही मंडी – जिले की कृषि उपज मंडी में इन दिनों मक्के की बंपर आवक बनी हुई है। 13 नवंबर को मंडी मं 16368 बोरे मक्के की उपज खरीदी गई। जबकि इसके पहले भी मंडी में मक्के की बंपर आवक हुई है। मक्के की बंपर आवक की वजह से मंडी प्रबंधन को खरीदी भी रोकना पड़ा है। इसके अलावा 13 नवंबर को 2332 क्विंटल सोयाबीन की भी आवक हुई, जबकि 14 नवंबर को 870 बोरे सोयाबीन, 8 बोरे चना, 25369 बोरे मक्का और 2457 बोरे गेहूं की खरीदी की गई। 14 नवंबर को सोयाबीन के न्यूनतम भाव 3500 और अधिकतम 4400 रूपये रहे।

घाटे के बावजूद किसान मंडी में बेच रहे सोयाबीन

गौरतलब रहे कि इस साल करीब 4892 रुपये समर्थन मूल्य में सोयाबीन की खरीदी कर रही है, जबकि मंडी में बुधवार 13 नवंबर को सोयाबीन 3400 न्यूनतम और 4100 अधिकतम दाम में खरीदा गया। समर्थन की तुलना में किसानों ने मंडी में करीब 500 से 700 रुपए प्रति क्विंटल तक कम दामों में सोयाबीन बेचा है। वहीं किसानों का कहना है कि मंडी में उपज बेचने पर नगद भुगतान भी तुरंत हो जाता है, जबकि समर्थन मूल्य में उपज बेचने पर कई दिनों बाद खाते में राशि आती है। अभी किसानों को रबी फसल की बुआई के लिए खाद-बीज खरीदी के लिए पैसे की जरूरत है, जबकि समर्थन मूल्य में उपज बेचने पर कुछ समय बाद भुगतान मिलता है।

मक्का का उठाव नहीं करने वाले व्यापारियों पर लगाया जुर्माना

बैतूल। कृषि उपज मंडी से अपने बोर नहीं उठाने वाले तीन व्यापारियों को मंडी प्रबंधन ने मक्का की नीलामी से सस्पैंड कर दिया है। इसके साथ ही तीनों व्यापारियों द्वारा चार दिन बाद भी उपज नहीं उठाने पर जुर्माना वसूल करने का नोटिस दिया है। जिसमें से एक व्यापारी से जुर्माना भी वसूल किया गया है। गौरतलब रहे कि मंडी अधिनियम के अनुसार व्यापारियों को 24 घंटे में उनकी उपज उठाने का प्रावधान होने के बावजूद बैतूल मंडी में कुछ व्यापारियों द्वारा 4 दिन बाद भी उपज नहीं उठाई थी। मंडी के शेड में व्यापारियों के बोरे रखे हुए थे। जिससे किसानों को मंडी शेड के बाहर उपज उतारने मजबूर होना पड़ रहा हैं। मंडी सचिव शीला खातरकर ने बताया बुधवार को मंडी के शेड से बोरे नहीं उठाने वाले तीन व्यापारियों को जुर्माना वूसली करने का नोटिस दिया गया है। श्रीमती खातरकर ने बताया कि इनमें से एक व्यापारी द्वारा जुर्माना भी जमा कर दिया है। इसके साथ ही मंडी से मक्का नहीं उठाने के चलते बुधवार को तीनों व्यापारियों को मक्का खरीदने बोली नहीं लगाने दी गई। श्रीमती खातरकर ने बताया जब तक व्यापारी पूर्व में खरीदी गई उपज नहीं उठाते है तब तक उन्हें मक्का की नीलामी में शामिल नहीं करने के निर्देश दिए गए है। इधर बुधवार को मक्का की बंपर आवक होने से मंडी में आई पूरी मक्का की नीलामी नहीं हो पाई। जिसकी गुरूवार को पहले नीलामी की गई। उसके बाद ही नई आने वाली मक्का की नीलामी हुई। शुक्रवार को गुरूनानक जयंती का अवकाश होने से मंडी बंद रहेगी।

इनका कहना

अक्टूबर में बारिश होने से फसल भीग गई थी। जिसके कारण अभी किसान उपज सूखाने में लगे हुए है। एफएक्यू के मापदंड अनुसार 12 प्रतिशत तक नमी वाली ही सोयाबीन उपज खरीदी की जा सकती है। अभी तक सिर्फ एक केन्द्र पर 90 क्विंटल सोयाबीन की खरीदी की है।

-रामवीर सिंह राजपूत,
सहायक संचालक, कृषि विभाग, बैतूल

आज से शुरू होगा नगर की सांस्कृतिक धरोहर कहा जाने वाला ताप्ती मेला

कार्तिक पूर्णिमा पर हजारों श्रद्धालु लगाएंगे ताप्ती सरोवर में आस्था की डुबकी

बैतूल/मुलताई। मां ताप्ती के पवित्र नगर मुलताई में प्रतिवर्ष लगने वाला ताप्ती मेला, मेला मात्रा न होकर नगर की प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर भी है। जिसकी अपनी धार्मिक और पौराणिक महत्ता है। कार्तिक पूर्णिमा से प्रारंभ होकर एक माह तक चलने वाला यह ताप्ती मेला गुजरती सदियों और बदलते नगर, मठ, मंदिरो के स्वरूप का गवाह भी रहा है। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर संपूर्ण जिले सहित दूसरे प्रदेशों विशेष तौर से महाराष्ट्र से

बड़ी संख्या में श्रद्धालु मां ताप्ती के पवित्र सरोवर में स्नान करने के लिए ताप्ती तट पहुंचते हैं। इस वर्ष गुरुवार शाम से ही ताप्ती स्नान के लिए श्रद्धालुओं का ताप्ती तट पहुंचाना शुरू हो चुका था, सैकड़ो श्रद्धालु देर रात में ही मुलताई पहुंच चुके थे। माना जाता है कि कार्तिक पूर्णिमा पर ताप्ती स्नान करने से समस्त कष्टो का निवारण हो जाता है और असीम पुण्य की प्राप्ति होती है। यही कारण है कि कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर दूर-दूर से लोग मां ताप्ती स्नान एवं दर्शन के लिए यहां पहुंचते हैं

आज से शुरू होगा ताप्ती मेला

मेले सदियों से हमारी संस्कृति का अंग रहे हैं। ताप्ती मेला भी इनमें से एक है, जिसकी तैयारिया पूर्ण हो गई है और आज से इसका प्रारंभ होगा। ताप्ती मेला अत्यंत प्राचीन मेलों में से एक है, इसका प्रारंभ कब हुआ यह कहना अत्यंत कठिन है, किंतु ताप्ती मेला समाप्ति के बाद ही जिले मे अन्य मेलों का प्रारंभ होता है। तीन दशक पूर्व ताप्ती मेला ताप्ती सरोवर के इर्द गिर्द लगा करता था। फिल्मी टॉकीज, सर्कस, यमपुरी : जैसी करनी वैसी भरनी, छोटे झूले, मनोरंजन का मुख्य आकर्षण हुआ करते थे, किंतु आबादी क्षेत्र बढ़ता गया और मेला लगभग समाप्त होने को था कि तभी तत्कालीन एसडीएम प्रमोद गुप्ता एवं एसडीओ पुलिस एनपी मिश्रा द्वारा मेले की आधारशिला टॉकीज के पिछले भाग में रखी गई। इसके बाद फिर आबादी ने मेले के वैभव को समाप्त कर दिया था, इसके उपरांत नगर पालिका अध्यक्ष सुप्रिया संजय यादव के प्रयास से इस मेले को व्यापक रूप देने हेतु साप्ताहिक बाजार में ताप्ती मेले की बुनियाद को रखा गया। साप्ताहिक बाजार होने के कारण इसे फिर स्थल परिवर्तन कर सुप्रिया संजय यादव एवं तत्कालीन एसडीएम भरत यादव के प्रयास से इस मेले को वर्तमान राम मंदिर की भूमि पर लगाया गया है। हालांकि इस ताप्ती मेले का वैभव निरंतर बढ़ता जा रहा है। हर वर्ष करीब 350 से ज्यादा दुकानें मेले में लगती है इस बार करीब 400 से ज्यादा दुकानें लगने की उम्मीद जताई जा रही है।

स्वच्छता अभियान चलाकर मनाया बाल दिवस

बैतूल। बाल दिवस के अवसर पर यूरो किड्स और यूरो प्राइड स्कूल नेहरू पार्क में बच्चों ने स्वच्छता अभियान चलाया। इस मौके पर द्वारा स्कूल डायरेक्टर डॉ. प्राची भार्गव ने बताया कि नगर पालिका विभाग की मौजूदगी में गायन, चित्रकला, नाटक आदि प्रतियोगिता के माध्यम से

स्वच्छता के प्रति जागरूक किया। नपाध्यक्ष पार्वती राव बारस्कर ने जवाहर लाल नेहरू के जन्मदिवस और बाल दिवस की शुभकामनाएं दी और सभी से स्वच्छता का संकल्प लिया। डॉ.प्राची भार्गव ने बताया कि शहर में नेहरू पार्क एकमात्र पार्क है जिसको स्वच्छ और साफ रखना हम सभी का कर्तव्य और दायित्व है। डॉ.भार्गव ने कहा किपार्क की स्थिति अच्छी नहीं है। वहां पर झूले टूटे हुए हैं और अत्यधिक गंदगी फैली हुई थी जिससे अब नेहरू पार्क बच्चों का पसंदीदा पार्क नहीं रहा और बच्चों का मनोबल पार्क को देख कर काफी गिरा हुआ है। गंदगी को साफ करने के लिए स्कूल के बच्चों ने साफ सफाई अभियान में हिस्सा लिया तथा अपने घर शहर और देश को स्वच्छ बनाने का संदेश दिया।

सफाई कर्मचारियों ने प्रदेश प्रभारी को सौंपा ज्ञापन

बैतूल। सफाई कर्मचारियों ने अपनी समस्याओं को लेकर नगरीय निकाय के प्रदेश प्रभारी को सौंपा ज्ञापन। इस संबंध में जिला महामंत्री विशाल खरे ने बताया कि मध्य प्रदेश नगरीय निकाय के प्रदेश प्रभारी हरिओम कुशवाहा को ज्ञापन सौंप कर नगर पालिका के ओम साईं विजन में कार्यरत समस्त कर्मचारियों की विभिन्न समस्याएं बताई। जैसे उनका ईपीएफ नहीं कटा जा रहा है, कुछ चुनिंदा कर्मचारियों का ईपीएफ काटा

गया वो भी केवल नाम मात्र के लिए। उन्हें वेतन भी कलेक्टर दर से नहीं भुगतान किया जा रहा है। विगत कई दिनों से कर्मचारी अपनी मांगों को लेकर दर-दर भटक रहे हैं। मुख्य नगरपालिका अधिकारी,कलेक्टर और श्रम विभाग सभी को जानकारी होने के बाद भी उनकी सुध लेने वाला कोई नहीं है। अपनी मांगों के लिए संघर्ष करने पर ओम साईं विजन के अधिकारी कार्य से बंद करने की धमकी देते हैं। प्रदेश प्रभारी हरिओम कुशवाहा ने कहा श्रमिकों का शोषण बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होने कहा कि भारतीय मजदूर संघ के वरिष्ठ पदाधिकारियों के चर्चा कर मुख्य नगर पालिका अधिकारी एवं कलेक्टर बैतूल के साथ बात की जाएगी। जिले में समाधान नहीं होगा तो प्रदेश स्तर पर मांगों को लेकर पत्राचार किया जाएगा। इस अवसर पर नगर पालिका मजदूर संघ के पदाधिकारी सहित सदस्य मौजूद थे।

श्रीमती शशि शशांक गुबरेले हुईं सम्मानित

विप्र प्रतिभा सम्मान समारोह में मिला सम्मान

बैतूल। बैतूलगंज निवासी श्रीमती शशि गुबरेले पति शशांक गुबरेले का केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा सम्मान किया गया था। उन्हें यह सम्मान केन्द्रीय विद्यालय भोपाल में प्रायमरी शिक्षक के रूप में कार्यरत रहते हुए शाला में नवाचार एवं विद्यालयीन स्वास्थ्य एवं स्वच्छता पर वर्ष 2015 में नई दिल्ली में प्रोजेक्ट देने पर दिया गया था। इन्हीं विषयों पर वर्ष 2016 में संभाग स्तरीय पुरस्कार भी प्राप्त किया था। वे वर्तमान में भी इन्हीं विषयों को लेकर लगातार उत्कृष्ट कार्य कर रही है, उनके नवाचार की प्रशंसा हर तरफ हो रही है और इन्हीं खूबियों को देखते हुए हाल ही में बैतूल सर्व ब्राह्मण समाज जिला बैतूल के बैनर तले आयोजित कार्यक्रम विप्र प्रतिभा सम्मान समारोह बढ़ते कदम-2024 में भी समाज द्वारा उनका सम्मान किया गया है।

पूर्व विधायक निलय डागा आज 15 नवंबर को निकालेंगे मां ताप्ती चुनरी पद यात्रा

बैतूल। किसानों और सर्वहारा वर्ग की खुशहाली एवं समृद्धि के लिए मां ताप्ती चुनरी पद यात्रा इस वर्ष 15 नवंबर को भव्य स्वरूप में निकाली जाएगी। इस पावन यात्रा का आयोजन पूर्व विधायक निलय विनोद डागा द्वारा किया जा रहा है, जिन्होंने 11 वर्षों तक लगातार यह यात्रा निकालने का संकल्प लिया है। इस वर्ष यह यात्रा आठवें वर्ष में प्रवेश कर रही है। विगत 7 वर्षों से श्री डागा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती दीपाली डागा के साथ यह पद यात्रा सफलतापूर्वक संपन्न कर चुके हैं। पूर्व विधायक निलय विनोद डागा की इस यात्रा का उद्देश्य सूर्यपुत्री और जीवनदायिनी मां ताप्ती की महिमा का गुणगान करते हुए क्षेत्र के किसानों एवं गरीब वर्ग की समृद्धि के लिए प्रार्थना करना है। प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित इस धार्मिक यात्रा में युवाओं, किसानों और महिलाओं का जनसमूह सम्मिलित होता है, जो श्रद्धा और आस्था के साथ मां ताप्ती की चुनरी अर्पण करने के लिए बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं।

सुबह 7 बजे शुरू होगी पद यात्रा, इन मार्गो से गुजरेगी- मां ताप्ती चुनरी पद यात्रा का शुभारंभ आज 15 नवंबर को प्रातः 7 बजे लल्ली चौक स्थित प्राचीन शिव मंदिर में पूजन-अर्चन से होगा। यात्रा की शुरुआत पूजा के बाद लल्ली चौक से होगी, जो थाना चौक, टिकारी अखाड़ा चौक, कारगिल चौक, सदर, ग्राम धनोरा, भड़ूस, महदगांव, डहरगांव और खेडी से होते हुए दोपहर 2 बजे ताप्ती घाट पहुंचेगी। यहां मां ताप्ती को चुनरी अर्पण करने के साथ पूजा-अर्चना का आयोजन किया जाएगा, जिसके बाद सभी यात्रा में मौजूद एवं वहां उपस्थित भक्तों के लिए भोजन प्रसादी का प्रबंध किया गया है। निलय डागा और उनकी पत्नी श्रीमती दीपाली निलय डागा ने क्षेत्रवासियों से अपील की है कि इस यात्रा में सम्मिलित होकर धर्मलाभ अर्जित करें।

विकास के लिए संकल्पित है केन्द्र और मध्यप्रदेश सरकार : खण्डेलवाल

बैतूल विधायक नें दी 1.86 करोड़ रुपये के विकास कार्यो की सौगात

बैतूल। बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल नें कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केन्द्र और मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव की मध्यप्रदेश सरकार समाज के हर वर्ग की तरक्की के लिए संकल्पित है। उन्होनें कहा कि केन्द्र और मध्यप्रदेश सरकार की जन हितैशी योजनाओं से जन-जन को लाभ मिल रहा है साथ ही गॉव से लेकर शहर तक तरक्की नजर आ रही है। बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल नें कहा कि गॉव व ग्रामीणों की आवश्यकता के मुताबिक वे लगातार निर्माण एवं विकास कार्य स्वीकृत करवानें में जुटे हुए है। सभी को स्वास्थ,शिक्षा, सिंचाई,सड़क, बिजली, पेयजल सहित अन्य मूलभूत सुविधाए उपलब्ध करवानें के साथ ही अब उनका फोकस युवाओं और महिलाओं को रोजगार उपलब्ध करवानें पर है। बैतूल विधयाक श्री खण्डेलवाल नें उक्त बातें 14 नवम्बर को जनपद पंचायत बैतूल अंतर्गत जीन,बोरगांव, दनोरा,(जीन) गढा,देवठान,बोदी जूनावानी और हिवरखेड़ी ग्रामों में मुख्यमंत्री विशेष निधी से स्वीकृत एक करोड़ 86 लाख रुपये लागत के निर्माण कार्यो के भूमिपूजन के दौरान कही। बैतूल विधयाक नें उक्त ग्रामों के भ्रमण के दौरान ग्रामीणों से संवाद कर उनकी समस्याएं सुनी और संतुष्टिकारक निराकरण किया।

पुलियाओं के निर्माण से राह होगी आसान- ग्रामीणों और किसानों की मॉग पर बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल नें मुख्यमंत्री विशेष निधी से देवठान में 65 लाख एवं बोदी जूनावानी में 45 लाख रुपये की पुलिया स्वीकृत करवाई है। उक्त पुलियाओं के निर्माण से देवठान,मिर्जापुर,बोदी जूनावानी, गोनीघाट महूपानी, चिखली, मकड़ा,ग्रामों के ग्रामीण एवं किसानों की राह आसान हो जाएगी। पुलियाओं के निर्माण से उक्त ग्राम मुख्य मार्गो से जुड़ जाएगें। साथ ही बारिश में भी आवगमन सुगम होगा। बैतूल विधायक नें गुरुवार को उक्त दोनों पुलियों के निर्माण कार्य के साथ हिवरखेड़ी ग्राम में 20 लाख रूपये की लागत से बननें वाली ग्रवेल सड़क का भूमिपूजन भी किया।

बहुउपयोगी हो सामुदायिक भवन- बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल नें मुख्यमंत्री विशेष निधी से स्वीकृत 56 लाख रुपये की लागत के सामुदायिक भवनों का भूमिपूजन जीन,बोरगांव,दनोरा(जीन) एवं गढ़ा ग्रामों में किया। ग्रामीणों से संवाद के दौरान उन्होनें कहा कि सामुदायिक भवनों का निर्माण गुणवत्तापूर्ण किया जाएगा साथ ही बाउंड्रीवॉल,पार्किग की व्यवस्था भी रहेगी। जिससे

सामुदायिक भवन बहुउपयोगी साबित होगें। सामुदायिक भवनों का उपयोगसामाजिक,धार्मिक आयोजनों के साथ अन्य आयोजनों के लिए किया जा सकेगा।

भूमिपूजन कार्यक्रम के दौरान पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष अनिल सिंह ठाकुर,जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे,जनपद अध्यक्ष इमला बाई जावलकर, जनपद उपाध्यक्ष कृष्णा लोखण्डे,मंडल अध्यक्ष नितिन बारस्कर,कांति यादव,जनपद सदस्य श्रीमति प्रीति बारस्कर,डॉ मुकुंदराव धोटे,सुनील अहाके,गोकुल सिंह राजपूत,पर्वत धोटे,रुपेश अग्रवाल,कमल मालवी,जुबेर पटेल,अनिल सिंह ठाकुर,विवेक जावलकर,मनोज गायकवाड,कुसुम वागदे,ललिता खांडवे,प्रहलाद महस्की सहित सरपंच पंच ग्रामीण एवं अधिकारीगण मौजूद रहे।

कामथ में बगैर अनुमति पोकलेन और जेसीबी मशीन से हो रहा उत्खनन

राजस्व आरआई ने मौके पर पहुंचकर बनाया पंचनामा, अनेक डंपरों के माध्यम से हो रहा था मुरम परिवहन

बैतूल/मुलताई। मुलताई क्षेत्र अवैध उत्खनन का केंद्र बनता जा रहा है और मुलताई नगर के आसपास बड़ी मात्रा में अवैध उत्खनन अधिकारियों की जानकारी में हो रहा है । अनेक शिकायत के बावजूद भी उत्खनन करने वालो पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो सकी है जिसके चलते अवैध उत्खनन करने वालों के हौसले बुलंद है। हाल ही में नगर की सीमा से लगे ग्राम कामथ में बगैर अनुमति के बड़ी मात्रा में उत्खनन की जाने का मामला सामने आया है जिसमें चार डंपर एवं पोकलेन एवं जेसीबी मशीनों के माध्यम से लगभग 4 एकड़ भूमि के ऊपरी भाग में 10 से 12 फीट से अधिक ऊंचे भाग को काटकर इससे निकलने वाले मुरम और मिट्टी का परिवहन किया जा रहा था जिसकी शिकायत ग्राम कामथ निवासी पूर्व सैनिक एवं सरपंच पति जीतू डहारे ने फोन के माध्यम से तहसीलदार से की शिकायत के बाद तहसीलदार के आदेश से मौके पर पहुंचे राजस्व आर आई कमल परते ने मौके पर पहुंचकर उत्खनन और परिवहन का पंचनामा बनाकर जांच प्रतिवेदन तहसीलदार को सौंप दिया है। इधर भूमि स्वामी का कहना है कि वह अपने खेत में उत्खनन कर रहा है इसके लिए उसको कोई परमिशन की आवश्यकता नहीं है जबकि जानकारों का मानना है कि 1 मीटर से अधिक खुदाई की स्थिति में भूमि स्वामियों को भी खनिज विभाग की अनुमति आवश्यक होती है और फिर यहां तो चार-चार डंपर और जेसीबी मशीन और पोकलेन के माध्यम से बड़े स्तर पर उत्खनन किया जा रहा था और इसकी सूचना तक स्थानीय प्रशासन में तहसीलदार या एसडीएम को आवेदन तक लगाकर नहीं दी गई थी।

आर.आई. ने बनाया उत्खनन और परिवहन का पंचनामा- आर.आई. कमल परते ने मौके पर पहुंचकर उत्खनन स्थल खसरा क्रमांक 71/4 भूमि का पंचनामा बनाते हुए अपने पांचना में लिखा है कि भूमि स्वामी जेसीबी मशीन एवं पोकलेन मशीन के द्वारा मचरम को खोदकर छिंदवाड़ा और मुलताई मार्ग से अपने खेत की रोड तक आने जाने के लिए मोरम डालकर रास्ता बना रहा है मोरम का परिवहन डंपर के माध्यम से किया जा रहा है। कमल परते ने बताया कि उन्होंने पंचनामा और जांच प्रतिवेदन तहसीलदार को सौंप दिया है।

अपने खेत में खुदाई के लिए कैसी परमिशन- कामथ निवासी आशीष ड़हारे भूमि को अपने मिल्कियत की भूमि बताकर उत्खनन करना स्वीकार करते हुए कहते है कि वह अपने भूमि में उत्खनन कर रहा है और स्वयं की भूमि में उत्खनन या उपयोग करने के लिए उसे किसी भी परमिशन की आवश्यकता नहीं है।

इनका कहना

कामथ मे उत्खनन की शिकायत मिलने पर राजस्व विभाग के अमले ने मौके पर पहुँच कर जांच की, वहां उत्खननकर्ता के पास किसी प्रकार की अनुमति नहीं थी। हमारे द्वारा उत्खनन भूमि के मूल्यांकन और कार्रवाई हेतु खनिज विभाग को लिखा गया है।

-अनामिका सिंह, तहसीलदार मुलताई

आदिवासी महानायक बिरसा मुंडा

बिरसा का बचपन गरीबी में गुजरा, और प्रारंभिक शिक्षा उन्होंने एक मिशनरी स्कूल में प्राप्त की। हालांकि, बाद में उन्होंने मिशनरी स्कूल छोड़ दिया और अपनी संस्कृति और परंपराओं के प्रति लौट आए। बिरसा मुंडा का जीवन धार्मिक और सामाजिक जागरूकता के साथ जुड़ा था। उन्होंने ईसाई धर्म को अपनाने के बाद भी आदिवासी समाज के प्रति उनकी निष्ठा को नहीं छोड़ा। उन्होंने देखा कि उनके समाज पर बाहरी धर्म और अंग्रेजी शासन का भारी प्रभाव पड़ रहा था, जिससे आदिवासी समुदाय की पहचान खतरे में थी। इसलिए, उन्होंने अपने समुदाय के बीच एक धार्मिक आंदोलन का नेतृत्व किया, जिसका मुख्य उद्देश्य आदिवासी संस्कृति की रक्षा करना और बाहरी प्रभावों से उन्हें दूर रखना था।

जयंती पर विशेष

शिवकुमार शर्मा

लेखक महिला एवं बाल विकास विभाग से सेवानिवृत्त संयुक्त संचालक हैं।

बिरसा मुंडा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के आदिवासी नेता थे, उन्होंने आदिवासी समाज के लिए सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक सुधार लाने का प्रयास किया। बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर 1875 को उलीहातू, छोटा नागपुर (अब झारखंड) में हुआ था। उनका परिवार मुंडा जनजाति से संबंधित था, जो अपने पारंपरिक रीति-रिवाजों और कृषि पर आधारित जीवनशैली का पालन करता था। बिरसा का बचपन गरीबी में गुजरा, और प्रारंभिक शिक्षा उन्होंने एक मिशनरी स्कूल में प्राप्त की। हालांकि, बाद में उन्होंने मिशनरी स्कूल छोड़ दिया और अपनी संस्कृति और परंपराओं के प्रति लौट आए। बिरसा मुंडा का जीवन धार्मिक और सामाजिक जागरूकता के साथ जुड़ा था। उन्होंने ईसाई धर्म को अपनाने के बाद भी आदिवासी समाज के प्रति उनकी निष्ठा को नहीं छोड़ा। उन्होंने देखा कि उनके समाज पर बाहरी धर्म और अंग्रेजी शासन का भारी प्रभाव पड़ रहा था, जिससे आदिवासी समुदाय की पहचान खतरे में थी। इसलिए, उन्होंने अपने समुदाय के बीच एक धार्मिक आंदोलन का नेतृत्व किया, जिसका मुख्य उद्देश्य आदिवासी संस्कृति की रक्षा करना और बाहरी प्रभावों से उन्हें दूर रखना था।

बिरसा मुंडा का सबसे प्रमुख योगदान मुंडा विद्रोह (जिसे 'उलगुलान' भी कहा जाता है) था। 1890 के दशक में, ब्रिटिश सरकार की नीतियों ने आदिवासियों की जमीनों पर कब्जा करना शुरू कर दिया, जिससे आदिवासी समाज में असंतोष फैल गया। इसके जवाब में बिरसा ने जल, जंगल, जमीन की रक्षा के लिए आदिवासियों को संगठित किया और अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह छेड़ा।बिरसा ने 'अबुआ दिशुम अबुआ राज' (हमारा देश, हमारा राज) का नारा दिया, जिसका उद्देश्य आदिवासी समाज को अंग्रेजी शासन और जमींदारी प्रथा से मुक्ति दिलाना था। उनके नेतृत्व में हजारों आदिवासियों ने अंग्रेजों के खिलाफ हथियार उठाए और विद्रोह किया। हालांकि, यह विद्रोह अंग्रेजी शासन के कठोर दमन के चलते सफल नहीं हो सका, लेकिन इसने आदिवासी समाज में एक नई चेतना को जन्म दिया।

बिरसा मुंडा केवल एक विद्रोही नेता ही नहीं थे, बल्कि उन्होंने अपने समाज में महत्वपूर्ण सामाजिक सुधारों की भी शुरुआत की। उन्होंने आदिवासी समुदाय के भीतर प्रचलित कुरीतियों और अंधविश्वासों के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने आदिवासी समाज में फैले नशाखोरी, अंधविश्वास, और धार्मिक रीति-रिवाजों में व्याप्त बुराइयों को समाप्त करने की कोशिश की। बिरसा का मानना था कि इन कुरीतियों के कारण ही आदिवासी समाज बाहरी शक्तियों के शोषण का शिकार हो रहा है। उन्होंने अपने अनुयायियों से आग्रह किया कि वे नशा छोड़ें, साफ-सुथरा जीवन जीएं, और अपने आत्म-सम्मान को बनाए रखें। उन्होंने यह भी कहा कि धर्म का इस्तेमाल कर आदिवासियों को कमजोर किया जा रहा है, इसलिए उन्हें अपने पारंपरिक धर्म और विश्वासों की ओर लौटना चाहिए।1900 में ब्रिटिश सेना ने उन्हें पुनः गिरफ्तार किया। उन्हें 9 जून 1900 को रांची जेल में बंद किया गया, जहां संदिग्ध परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु केवल 25 वर्ष की आयु में हुई, लेकिन उनका संघर्ष और विचारधारा उनके जीवन के बाद भी जीवित रही उनकी मृत्यु के बाद भी, उनके विचार और आंदोलन जीवित रहे। उनके अनुयायियों ने उनकी मृत्यु के बाद भी संघर्ष जारी रखा, और यह आंदोलन धीरे-धीरे एक व्यापक आदिवासी अधिकार आंदोलन में बदल गया।बिरसा मुंडा का संघर्ष केवल उनके जीवन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी एक प्रेरणा का काम किया। भारतीय संविधान में आदिवासियों के लिए विशेष अधिकारों और उनके संरक्षण के प्रावधानों में भी उनके संघर्ष की झलक मिलती है।बिरसा मुंडा न केवल एक आदिवासी नेता थे, बल्कि वे एक महान विचारक, सुधारक और क्रांतिकारी भी थे। उनका जीवन और संघर्ष आज भी न केवल आदिवासी समुदाय के लिए अपितु समूचे भारतीय समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

गांधी माध्यमिक शाला में बाल दिवस मनाया

सुबह सवेरे सोहागपुर। तिलक वार्ड की गांधी माध्यमिक शाला में पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती के अवसर बाल दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय की वरिष्ठ शिक्षिका श्रीमती नीता शर्मा ने विद्यार्थियों को पाठ्य सामग्री कॉपी,पेन,पेंसिल के साथ टॉफी वितरण करके बाल दिवस मनाया ।इस अवसर पर शाला प्रभारी श्रीमती अभिलाषा मीना,प्रमोद परसाई,चंद्रप्रकाश साहू,सुनीता तोमर,हेमलता मेहरा विघालयके सदस्य एवं छात्र छात्राएं उपस्थित थीं।

पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती पर मित्र कन्या शाला में नेत्र शिविर

सुबह सवेरे सोहागपुर। पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती पर मित्र कन्या शाला में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के नेत्र विभाग के सहयोग से नेत्र शिविर का आयोजन नगर पंचायत परिषद अध्यक्ष श्रीमती लता यशवंत पटेल, मुख्य नगर पालिका अधिकारी राकेश मिश्रा, पार्षद रविशंकर उईके, नेत्र सहायक ए के शाक्य प्राचार्य डॉ संजीव शुक्ला के आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मित्र कन्या शाला के वरिष्ठ

सदस्य गणेशराम मंडलोई विशेष रूप से उपस्थित थे। जवाहरलाल नेहरू की जयंती पर बच्चों को समर्पित बाल दिवस पर बालक बालिकाओं की समग्र देखरेख हेतु नेत्र परीक्षण शिविर के अलावा सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं सामूहिक भोज का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में उपस्थित अतिथियों ने पंडित जवाहरलाल नेहरू के चित्र के समक्ष पुष्पांजलि अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसके उपरांत अतिथि देवो भव की सनातन संस्कृति अनुसार शाला परिवार ने अतिथियों का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। अतिथियों न नेत्र परीक्षण शिविर का शुभारंभ किया। अतिथियों ने बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए। विद्यालय की शिक्षिकाओं सुनीला मसीह, गुड़िया रघुवंशी, रूपा ठाकुर, कृतिका यादव, सोनाली यादव, शहनाज खान, अफसाना शाह, खुश्बू साहू, आदि ने गीत, नृत्य एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति के माध्यम से बच्चों एवं अतिथियों का मनोरंजन किया। कार्यक्रम का संचालन तनु आरसे ने किया।

धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान का जिला स्तरीय कार्यक्रम आज

बैतूल। जिला प्रशासन द्वारा धरती आबा ग्राम उत्कर्ष अभियान एवं भगवान बिरसा मुण्डा जयंती अवसर पर जिला स्तरीय कार्यक्रम आज 15 नवंबर को पीएमश्री जयवंती हॉक्सर महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में प्रातः 10 बजे से आयोजित किया गया है। जनजातीय कार्य विभाग की सहायक आयुक्त ने बताया कि कायक्रम के दौरान विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुति दी जाएगी। इसके अलावा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी प्रातः 11:00 बजे से टू-वे के माध्यम से हितग्राहियों से सीधे चर्चा करेंगे। कार्यक्रम में भीमपुर विकासखंड के रातामाटी ग्राम में एकलव्य विद्यालय के निर्माण कार्य का शिलान्यास भी किया जायेगा। इस कार्यक्रम में समस्त जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक उपस्थित रहेंगे।

आचार्य धर्मदास जी के बाद फिर हुआ संथारा पूर्वक समाधि मरण

● **इस बार संथारा साधक बने राजमल विनायक्या**

धार। आज मां सरस्वती एवं आध्य आचार्य धर्मदास जी की नगरी में जैन समाज में संथारा पूर्वक श्री राजमलजी विनायक्या का समाधि मरण हुआ । ये श्री अभय सुनील प्रदीप विनायक्या के पिता थे ।जैन समाज की इस दिवंगत आत्मा ने तीन दिन पूर्व ही समाज के साधुओं के समक्ष प्रतिज्ञा ले ली थी कि अब मैं मृत्यु आने तक अन्न जल ग्रहण नहीं करूंगा और ना ही सांसारिक सुख सुविधाओं का उपयोग करूंगा । जैन समाज में इसी को संथारा कहते हैं । इस प्रतिज्ञा के बाद राजमलजी जैन के दर्शनों हेतु रात दिन समाज के लोग आने लगे और नवकार मंत्र का अखंड जाप शुरू कर दिया ।

संपूर्ण संथारा सफलता पूर्वक डा दीपक नाहर की चिकित्सा निगरानी में तीन दिन में संपन्न हो गया और

अंततः बुधवार की शाम गोधूलि बेला में डा दीपक नाहर ने दिवंगत आत्मा की मृत्यु की घोषणा की ।

हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने दिवंगत आत्मा श्री राजमालजी विनायकया को कपड़े के रत्न से सुसज्जित डोली में किले के पीछे स्थित निवास से देवीजी श्मशान तक पैदल धार्मिक नारे लगाते हुए ले गए जहां समाज के श्री रमेश ओस्तवाल द्वारा जैन श्लोकों और गुरु मंत्र द्वारा लकड़ी रहित चिता में परिजनों द्वारा अग्नि दिलवाई ।

अन्नपूर्णा कालोनी किले के पीछे से घोड़ा चौपाटी से मोहन टॉकीज से उटावद दरवाजा से जवाहर मार्ग एम.जी. रोड से राजबाड़ा से ओसवाल स्थानक भवन से कालिका मार्ग से मुक्ति धाम डोल पहुंचा। अग्निसंस्कार के बाद मुक्तिधाम में जैन समाज द्वारा गुणानुवाद सभा आयोजित की गई जिसमें अशोक जैन, सुनील नाहर ,शांतिलाल कोठारी , जितेंद्र जैन,प्रकाश जैन ,हर्षा रूनवाल,समीक्षा विनायक्या, द्वारा दिवंगत देवलोकी आत्मा के जीवन चक्र पर संबोधन दिया । इस गुणानुवाद सभा का संचालन रमेश ओस्तवाल ने किया। इसके पश्चात संपूर्ण श्वेतांबर जैन श्री संघ की गौतम प्रसादी पार्श्वनाथ मंदिर, महात्मा गांधी मार्ग पर हुई

क्या होता है संथारा?

मानव जीवन का अंतिम मोड़ या जीवन की अंतिम संध्या संथारा हैं ।संथारा करने वाले साधक में आत्म बल होता हैं ।वह शांति पूर्वक शरीर को छोड़ने की योजना बनाता है ,उसमें न आवेश होता हैं न तड़पन होती हैं ,कषाय मंद होते है और सबके प्रति क्षमा भाव होता हैं ।

जीवन भर की साधना का अंतिम फ़ल होने से तथा भविष्य मे भी इसका सुखदायी फ़ल आत्मा के साथ चलने से संथारा आत्मा के लिए महोत्सव हैं । ऐसा ही प्रतिज्ञा लेकर संथारा जैन समाज के आचार्य श्री धर्मदासजी महाराज द्वारा जैन मूल्यों की रक्षा करने एवं आत्म कल्याण के उद्देश्य से आज से लगभग तीन सौ पचास वर्ष पूर्व किया था जो लगभग आठ दिन बाद पूर्ण हुआ था । जिस पाट पर अचार्य श्री ने प्राण त्यागे थे वोआज भी जैन स्थानक बनियावाडी में दर्शनार्थ रखा हुआ है।

राजस्व वसूली की कार्रवाई में तेजी लाएं

राजस्व प्रकरणों का समय सीमा में निराकरण किया जाए

बैतूल। बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल एवं कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी की उपस्थित में कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में राजस्व विभाग की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में निर्देश दिए कि शहर में अवैध कॉलोनियों के निमार्ण पर सख्ती से रोक लगाई जाए। शहर में अतिक्रमण के विरुद्ध मुहिम निरंतर जारी रहें। प्रधानमंत्री आवास पट्टे का लाभ पात्र हितग्राहियों को मिले यह सुनिश्चित किया जाए। समस्त पटवारी अपने कार्य में सजगता और गंभीरता लाएं तथा लंबित राजस्व प्रकरणों का निराकरण गंभीरता पूर्वक करें। राजस्व वसूली की कार्रवाई में भी तेजी लाएं और 30 नवंबर तक फार्मर रजिस्ट्री के लक्ष्य को हर स्थिति में पूरा करें। इसके अलावा सीएम हेल्पलाइन में दर्ज लंबित प्रकरणों का त्वरित निराकरण करें।

बैठक में संयुक्त कलेक्टर मकसूद अहमद, एसडीएम राजीव कहार, तहसीलदार, नायब तहसीलदार, राजस्व निरीक्षक तथा पटवारी उपस्थित थे। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने कहा कि पटवारी फौती नामांतरण, बंटवारा, फार्मर रजिस्ट्री, नक्शा तरमीम के प्रकरणों का निराकरण जल्द से जल्द करें तथा पटवारी हर माह फौती नामांतरण प्रकरणों के प्रतिवेदन तहसील कार्यालय में प्रस्तुत करें। इसी प्रकार कलेक्टर ने पटवारियों को यह भी निर्देश दिए कि पटवारी खुद अपने हल्के में जाकर लोगों के राजस्व समस्याओं के प्रकरण दर्ज कर कार्यों का निराकरण कराएं। सभी प्रकरणों को आरसीएमएस पोर्टल में मौके पर जाकर दर्ज कराएं।

राजस्व महा-अभियान 15 नवंबर 2024 से 15 दिसम्बर 2024 तक चलाया जाएगा

नर्मदापुरम। जिले में एक बार फिर 15 नवंबर से 15 दिसंबर तक राजस्व महा अभियान चलाए जाने की विज्ञप्ति प्रकाश में आई है। यह ठीक है कि मुख्यमंत्री के मंशानुसार राजस्व विभाग के राजस्व प्रकरणों को तुरंत निराकरण और राजस्व अभिलेख में त्रुटियों को ठीक करने की व्यवहारिक पहल का स्वागत किया जाना चाहिए लेकिन प्रशासन के लिए यह संभव है क्या..? राजस्व मामले में देखना यह है कि प्रशासन मुख्यमंत्री के मंशानुरोपित काम को कितने सलीके और जिम्मेदारी से पूरा कर पाता है। क्योंकि इससे पहले भी मुख्यमंत्री की इच्छा से राजस्व मामलों को निपटाने का काम प्रशासन ने मुख्यालय पर संचालित किया था। पर उसमें प्रशासन की गंभीरता तो नजर नहीं आई.? देखा जाए तो प्रशासन को राजस्व के उन मामलों को प्राथमिकता से निपटना चाहिए जो राजस्व महकमे सहित प्रशासन के लिए नासूर हैं /बन तो चुके हैं इसके अलावा प्रशासनिक कार्य-प्रणाली के लिए चुनौती साबित हो रहे..? नजूल शीट नं 15 प्लाट नं 15/2 आज तक शासकीय रिकॉर्ड में दुरुस्त नहीं हो पाया। इस प्लाट का सरकारी रिकॉर्ड में दुरुस्तीकरण जरूरी है क्योंकि विभाग इसमें पन्ना फट गया लिखकर शासन से ही खेल खेल रहा है। कितने साल से विभागीय अमला इस मामले की अनदेखी कर रहा है.? मामले में गंभीर कड़ी है। नर्मदा शिक्षा समिति के प्रबंधक रहे भवानी शंकर शर्मा ने बुधबाड़ा में पिता की स्मृति में निकाली पुस्तक विमोचन के मौके पर मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान की उपस्थिति में स्पष्ट कहा था 1972 में एस एन जी स्कूल शासनाधीन हो गया। फिर प्रशासन एस एन जी स्कूल का रिकॉर्ड 1972 से अब तक दुरुस्त नहीं कर पाया ऐसा क्यों.? पचास साल हो गये फिर भी प्रशासन रिकॉर्ड दुरुस्त नहीं कर पाया ऐसा क्यों..? फिर मामला एक शासकीय एस एन जी स्कूल के रिकार्ड दुरुस्त करने तक सीमित नहीं शासकीय गर्ल्स होमसाइंस कालेज नजूल शीट क्रमांक 45 प्लाट नं 15/2 1971 में शासनाधीन हो चुका लेकिन सरकारी रिकॉर्ड में में प्रेसिडेंट भावजी गर्ल्स एजूकेशन सोसायटी दर्ज है इसका रिकॉर्ड दुरुस्त तो छोड़िए सीमांकन तक नहीं किया गया। ऐसे ही नजूल शीट नंबर 49 प्लाट नं 33/3 सरकारी दस्तावेजों में नर्मदा महाविद्यालय व्यवस्थापक नर्मदा एजूकेशन सोसायटी होशंगाबाद के नाम पर दर्ज है। जबकि नियमानुसार उक्त भूमि सरकारी दस्तावेजों में शासकीय नर्मदा महाविद्यालय के नाम पर भूमि दर्ज होनी चाहिए। सरकारी जमीन सरकारी दस्तावेजों में निजी भूमि के रूप में दर्ज होने के बावजूद इन भूमि पर करोड़ों की लागत से सरकारी निर्माण कार्य हो चुके वह कैसे..?

मुनगा मामले में डायरेक्टर सहित दो पर मामला दर्ज

बैतूल। कांट्रेक्ट फार्मिंग में ठगे गए किसानों की शिकायत पर कोतवाली पुलिस ने यूबेगो एग्री साल्युशन प्राईवेट लिमिटेड के डायरेक्टर सहित दो लोगों पर मामला दर्ज किया गया है। कोतवाली टीआई देवकरण डहेरिया ने बताया कि इस मामले में पुलिस जांच कर रही है जिसमें किसानों के बयान लिए जाएंगे और उद्यानिकी विभाग की तत्कालीन उपसंचालक की भूमिका को लेकर भी जांच की जा रही है। जांच में प्रमुख रूप से यह बिंदु आया है कि इन किसानों से अनुबंध कराने में सरकार के आदेश थे या अधिकारी ने अपने स्तर पर कंपनी को लाभान्वित करने के लिए अनुबंध कराए थे? जांच में अगर यह साबित होता है कि किसानों की ठगी के मामले में अधिकारी की भूमिका रही तो उन पर भी मामला दर्ज किया जाएगा। कोतवाली पुलिस ने किसान गणेश मालवीय पिता स्व. मल्लूजी मालवी निवासी बडोरा की शिकायत पर धोखाधड़ी का यह मामला दर्ज किया। किसान की शिकायत पर प्रथम दृष्टया मामला ठगी का पाए जाने पर आवेदन में दिए गए कंपनी संचालक और श्री जायसवाल के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया गया है। इस मामले में तत्कालीन उप संचालक की भूमिका की भी जांच की जाएगी और विभाग से पत्र व्यवहार कर जानकारी ली जाएगी।

अंतर जिला महाविद्यालय युवा उत्सव कार्यक्रम 16 को

बैतूल। जेएच कॉलेज में 16 नवंबर को अंतर जिला महाविद्यालय युवा उत्सव कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा, जिसमें जिले भर के महाविद्यालय द्वारा अनेकों विधाओं में प्रस्तुति दी जाएगी। इस कार्यक्रम में एकलव्य लोक कला समिति के माध्यम से जेएच पीजी कॉलेज के युवा विद्यार्थी लोक नृत्य की प्रस्तुति देंगे। एकलव्य लोक कला समिति के डायरेक्टर महेश इंगले, राजेश कवदेती के नेतृत्व में जेएच पीजी कॉलेज के युवा छात्र-छात्राओ को संगीतकार सुनील ढोलकर, सागर ढोलकर अपनी ताल पर नृत्य की बारीकियां सिखा रहे है। एकलव्य लोक कला समिति के डायरेक्टर महेश इंगले ने बताया कि कार्यक्रम में भाग लेने वाली विजेता टीम 21 से 23 नवंबर को बरकतुल्लाह में जिले का प्रतिनिधित्व करेगी। महाविद्यालय के नियमित छात्र शिवानी मोहबे, पंकज कुमरे, समीर पांसे, कंचन धुर्वे, मनीषा सिरसाम, कौशल्या उईके, गंगा बुडग़रिया, विजय धुर्वे, अर्वातिका मेलवंशी, करण सलामे नृत्य की बारीकियां सिख रहे है।

बच्चे के पैर पर गाड़ी चढ़ाकर भागा कार चालक, पुलिस कर रही तलाश

बैतूल। एक कार चालक ने साढ़े चार साल के बच्चे के ऊपर कार चढा दी। गाडी का पहिया बच्चे के पैरों से गुजरा। जिसके बाद कार चालक गाड़ी लेकर भाग गया। परिजनों ने इसकी शिकायत कोतवाली थाने में दर्ज कराई है। घटना के बाद परिजन मासूम को लेकर अस्पताल पहुंचे। जहां डॉक्टरों ने मासूम का उपचार शुरू किया। यह पूरी घटना सीसीटीवी कैमरे में भी कैद हुई है। फिलहाल पुलिस कार चालक की तलाश कर रही है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार घटना बैतूल के चंद्रशेखर वार्ड की है। बच्चे की माँ पुष्पलता यादव ने बताया कि साढ़े चार साल का बेटा अयांश बुधवार दोपहर को घर के बाहर साइकिल चला रहा था। बहन अर्चना वहीं

खड़े होकर बेटे को देख रही थी, इसी दौरान कार ड्राइवर टक्कर मारकर भाग गया। कार का पिछला टायर बच्चे के ऊपर से निकल गया। चिल्लाने के बाद भी ड्राइवर गाड़ी भगा ले गया। कार के टायर के निशान बच्चे की पेंट पर छप गए हैं। इससे साफ है कि कार के पहिए उसके पैरों से गुजरे हैं। परिजन ने बुधवार रात कोतवाली थाने में एफआईआर दर्ज कराई है। टीआई देवकरण डेहरिया ने बताया कि सीसीटीवी में मिले रजिस्ट्रेशन नंबर के आधार पर कार और उसके चालक की तलाश की जा रही है।

नाम परिवर्तन सूचना

मेरे द्वारा भारतीय जीवन बीमा निगम, भोपाल द्वारा एक पॉलिसी क्रं. 354185913 प्राप्त की थी। जिसमें मेरा नाम रूपाली चुघ शादी के पूर्व का नाम अंकित है तथा शादी के पश्चात मेरा नाम श्रीमती रेनू चुघ पत्नी श्री कमल चुघ, मेरे आधार कार्ड 490179429467 में अंकित है जो कि सही व सत्य है तथा वर्तमान में मैं इसी नाम से जानी व पहचानी जाती हूं।

प्रार्थी

श्रीमती रेनू चुघ पत्नी श्री कमल चुघ

निवासी- फ्लेट क्रं.101, ए-1 रेसीडेंसी, नीरज नगर, बावडिया कलां, भोपाल, म.प्र.

सत्ता का सर्कस

दिनेश गुप्ता

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का कुनबा क्यों बिखर गया

जो मैदानी अफसर हैं खासतौर पर कलेक्टर और उनके अधीनस्थ आईएएस और राज्य प्रशासनिक सेवा के अफसरों के लिए सोमवार की रात हुआ प्रशासनिक फेरबदल चौंकाने वाला रहा। लेकिन, मंत्रालय के आला अफसरों के पास लगातार यह सूचनाएं थीं कि कटाई-छटाई का काम मुख्यमंत्री सचिवालय में भी होने जा रहा है। उनके लिए कुछ भी चौंकाने वाला नहीं है। सिवाय इसके कि मुख्यमंत्री सचिवालय में मुख्य सचिव के बाद वरिष्ठता क्रम में चौथे नंबर के अफसर राजेश राजौरा का रूतबा बरकरार है। अगस्त 2022 में भारत सरकार ने मध्य प्रदेश में आईएएस अफसरों के जो पद कैडर में शामिल किए थे,उनमें मुख्यमंत्री और राज्यपाल के सचिवालय के लिए एक-एक अफसर प्रमुख सचिव स्तर का स्वीकृत किया था। सोमवार के प्रशासनिक फेरबदल से पहले मुख्यमंत्री सचिवालय में एक अपर मुख्य सचिव के अलावा दो प्रमुख सचिव काम कर रहे थे। दूसरी तरफ कई विभागों की जिम्मेदारी प्रमुख सचिव के स्थान पर सचिव स्तर के अधिकारी को सौंपी गई है। ऐसा क्यों किया गया, आईएएस अफसरों से इसकी वजह कौन पूछेगा? यदि पूछी तो उनका जवाब मंत्रालय के लिए काडर में स्वीकृत प्रमुख सचिव और सचिवों की संख्या में तलाश करना होगा। कार्मिक मंत्रालय ने मध्यप्रदेश में आईएएस अफसरों की अधिकतम संख्या 459 स्वीकृत की है। इनमें 320 पद सीधी भर्ती के हैं। कुल सीनियर ड्यूटी पोस्ट की संख्या 298 है। इनमें मुख्य सचिव और उनके समकक्ष वेतनमान वाले कुल सात पद संवर्ग में स्वीकृत हैं। अर्थात चौदह अधिकारी अपर मुख्य सचिव बन सकते हैं। मध्यप्रदेश में 1993 बैच अपर मुख्य सचिव बन चुका है। पद खाली नहीं हैं,इस कारण बैच के दो अधिकारी अनुपम राजन और अनिरुद्ध मुखर्जी अभी अपर मुख्य सचिव नहीं बन पाए हैं।

वीरा राणा जब तक राज्य की मुख्य सचिव रहीं उनके पास संवर्ग के दो पदों की जिम्मेदारी थी। मुख्य सचिव के साथ उनके पास माध्यमिक शिक्षा मंडल के अध्यक्ष की अतिरिक्त जिम्मेदारी थी। उसी पद पर रहते हुए उन्हें पिछले साल एक दिसंबर को मुख्य सचिव का अतिरिक्त प्रभार दिया गया था। जब उन्हें मुख्य सचिव की जिम्मेदारी नियमित रूप से मिल गई तब माध्यमिक शिक्षा मंडल के अध्यक्ष का प्रभार उन्होंने अतिरिक्त तौर पर अपने पास रखा। आमतौर पर मुख्य सचिव किसी अन्य विभाग की जिम्मेदारी अपने पास नहीं रखता। अनुराग जैन के पास भी नहीं है। इकबाल सिंह बैंस या उनके पूर्ववर्ती अधिकारियों ने भी नहीं रखी थी। इकबाल सिंह बैंस जब मुख्यमंत्री सचिवालय में थे,उस वक्त प्रशासन पर पकड़ के लिए यहां पदस्थ अफसरों को महत्वपूर्ण विभागों की जिम्मेदारी देने की परंपरा शुरू हुई थी। इससे पहले मुख्यमंत्री के सचिव के पास सिर्फ विमानन विभाग की जिम्मेदारी होती थी। डॉ. मोहन यादव ने मुख्यमंत्री सचिवालय में आला अफसरों की तैनाती कर उन्हें भारी भरकम विभाग भी दे दिए। इससे समकक्ष अधिकारियों में असंतोष स्वाभाविक तौर पर देखने को मिला रहा था। वर्तमान में मुख्यमंत्री कार्यालय में पदस्थ अपर मुख्य सचिव राजेश राजौरा के पास दो बड़े तकनीकी विभाग जल संसाधन एवं नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण विभाग की जिम्मेदारी भी है। वे प्राधिकरण के उपाध्यक्ष भी हैं। इसके अध्यक्ष मुख्यमंत्री होते हैं। इसके साथ-साथ प्राधिकरण के सदस्य पुनर्वास और बेसिन प्रोजेक्ट कंपनी की जिम्मेदारी भी इनके पास है। जल संसाधन और नर्मदा घाटी विकास विभाग ही ये वे दो विभाग जिनमें हैदराबाद और गुजरात की प्रभावशाली कंपनियों के ठेके हैं। ई-टेंडरिंग घोटाले से भी इन विभागों के नाम जुड़ चुके हैं। गुजरात के ठेकेदारों के जरिए यह बात भी ऊपर तक पहुंची है कि राज्य में हुए नेतृत्व परिवर्तन के बाद हैदराबाद की कंपनियों का वर्चस्व बढ़ गया है।

राज्य में हुए नेतृत्व परिवर्तन के बाद डॉ. मोहन यादव का मुख्यमंत्री बनना कई लोगों के लिए वरदान साबित हुआ। खासतौर पर उन अफसरों के लिए जो उज्जैन में कभी न कभी पदस्थ रहे थे। डॉ. यादव ने सभी को अपनी गुड बुक में शामिल किया। लेकिन, जल्द ही बदलना भी पड़ा। दरअसल अफसरों को यह समझ आ गया था कि मोहन यादव राजकाज के ज्यादा ज्ञाता नहीं है। इस कारण कुछ अफसरों ने उन्हें कोटरी बनाकर घेर लिया। मुख्यमंत्री की पकड़ को दिखाने वाले कुछ ही पद होते हैं। इनमें जनसंपर्क और इंटेलिजेंस का पद सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण माना जाता है। अल्प समय में ही इन पदों पर दो-दो बार अफसर बदलना पड़े है। मुख्यमंत्री सचिवालय का बदलाव भी यही बताता है कि अनुराग जैन अब उन गलतियों को सुधारने की कोशिश कर रहे हैं,जो अंजाने में मुख्यमंत्री से हो गईं। महत्वपूर्ण पद पर गलत अफसर पदस्थ करने की चूक। अनुराग जैन के मुख्य सचिव बनने के बाद मंत्रालय में किया गया यह पहला बड़ा प्रशासनिक फेरबदल है। इसलिए कहा जा सकता है कि जैन ने हर पहलू को ध्यान में रखकर अधिकारियों को उनकी योग्यता और विभाग को उसकी आवश्यकता के अनुसार क्षमता का प्रदर्शन करने वाले अधिकारी को जिम्मेदारी दी गई है। मुख्यमंत्री सचिवालय से हटाए जाने से पहले संजय शुक्ला के पास चार विभागों का प्रभार थी। इनमें दो बेहद महत्वपूर्ण विभाग हैं। महिला एवं बाल विकास विभाग तथा खनिज विभाग। महिला एवं बाल विकास विभाग की पोषण आहार योजना को लेकर मुख्य सचिव अनुराग जैन ने जो टिप्पणी की थी,उसकी चर्चा मंत्रालय से लेकर आंगनबाड़ी तक रही। सरकार जो नया विमान खरीद रही है,उसमें भी संजय शुक्ला की महत्वपूर्ण भूमिका देखी जा रही है। संजय शुक्ला को राजेश राजौरा अपने साथ मुख्यमंत्री सचिवालय में लाए थे। उन्हें खनिज जैसा महत्वपूर्ण विभाग भी दिया गया। खनिज विभाग ने ही भोपाल में माइनिंग कॉन्क्लेव का आयोजन किया था। संजय शुक्ला को अब नगरीय विकास एवं आवास विभाग का प्रमुख सचिव बनाया गया है। उनसे खनिज विभाग भी ले लिया गया है। महिला बाल विकास विभाग भी नहीं है। विमानन और योजना आर्थिक सांख्यिकी विभाग यथावत है। इसके साथ ही मध्य प्रदेश गृह निर्माण मंडल की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी अतिरिक्त तौर पर दी गई है। नगरीय विकास एवं आवास विभाग के मंत्री कैलाश विजयवर्गीय हैं। संजय शुक्ला जब इंदौर नगर निगम के आयुक्त थे उस वक्त विजयवर्गीय महापौर थे। शायद इस कारण बेहतर समन्वय की उम्मीद की जा सकती है। वैसे विजयवर्गीय सरकार से दूरी बनाए हुए हैं। मंत्रिमंडल की बैठकों में भी उनकी अनुपस्थिति को नोटिस किया जा रहा है। गृह निर्माण मंडल से मनीष सिंह की रवानगी भी कैलाश विजयवर्गीय के कारण ही हुई है। मनीष सिंह जब इंदौर कलेक्टर थे तब उन्होंने विजयवर्गीय के करीबी बिल्डरों को खूब सताया था। मनीष सिंह को परिवहन विभाग में अपर सचिव बनाया गया है। कहा जा रहा है कि सरकार सड़क परिवहन निगम शुरू करना चाहती है। इसमें मनीष सिंह की मदद ली जाएगी।

राजौरा और संजय शुक्ला के मुख्यमंत्री सचिवालय में आने से पहले तक राघवेन्द्र सिंह अकेले प्रमुख सचिव थे। लोकसभा चुनाव के बाद हुए फेरबदल में उनके ऊपर दो और अफसर आकर बैठ गए। राघवेन्द्र सिंह के पास मुख्यमंत्री सचिवालय में औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन विभाग का अतिरिक्त प्रभार था। सचिवालय से हटाए जाने के बाद उन्हें इस विभाग की पूरी जिम्मेदारी तो मिली ही साथ ही सूक्ष्म लघु एवं मध्यम विभाग का जिम्मा भी साथ में दिया गया है। आनंद विभाग अतिरिक्त जिम्मेदारी के तौर दिए गए हैं। इन अफसरों को हटाए जाने के कई कारण लोग अपने-अपने हिसाब से दे रहे हैं। लेकिन संजय शुक्ला को लेकर यह जरूर कहा जा रहा है कि वे जरूरी फाइल पर भी कई-कई दिन मुख्यमंत्री के हस्ताक्षर नहीं कराते थे। कारण कुछ भी हो सकता है। अनुराग जैन के मुख्य सचिव बनने के बाद महत्वपूर्ण पदों की बोली लगने की चर्चा जरूर बंद हो गई है। संचालक राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के पद की बोली पांच करोड़ तक पहुंचने की चर्चा चल रही थी। जिसका नाम चर्चा में था,उसे यह पद नहीं मिला। इस पद पर 2014 बैच की डॉ.सलोनी सिडाना को पदस्थ किया गया है। साथ ही उन्हें प्रबंध संचालक मध्यप्रदेश पब्लिक हेल्थ सर्विसेस कॉर्पोरेशन लिमिटेड की जिम्मेदारी अतिरिक्त सौंपी गई है। वीरा राणा जब तक राज्य की मुख्यमंत्री रहीं उन्होंने योग्यता के बजाए पहुंच के आधार पर पदों को बांटा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जो आदेश दिया उसका पालन कर दिया। अनुराग जैन वापस मुख्य सचिव के पद की प्रतिष्ठा स्थापित करने में लगे हैं। इससे सबसे ज्यादा खुशी युवा अफसरों में देखी जा रही है। मुख्य सचिव ने युवा अफसरों को मीटिंग में बुलाया भी और उन्हें सुना भी। इकबाल सिंह बैंस के कार्यकाल में तो चंद अफसरों को मिलने का मौका मिलता था। टाइम मांगने के बाद भी महीनों तक कोई उत्तर ही मुख्य सचिव कार्यालय से नहीं मिलता था। मंत्रालय में इस श्रेणी के अफसरों को लग रहा है कि व्यवस्था बदलाव की ओर है। अफसरों को अपमान भी नहीं सहना होगा। हक भी मिलेगा। हाल ही में मुख्य सचिव अनुराग जैन ने पदोन्नति वाली एक महिला आईएएस अफसर को कलेक्टर बनाए जाने के प्रस्ताव को यह कह कर अस्वीकार दिया कि बैच में उनसे वरिष्ठ अफसरों को अब तक जिला नहीं मिल पाया है। जिले में अफसर क्रम से भेजे जाएंगे। कलेक्टर बनाने के लिए स्थापित प्रक्रिया को किसी चहेते के लिए तोड़ा नहीं जाएगा। अभी 2015 बैच के अधिकारी कलेक्टर बनाए जा रहे हैं। बैच के सीधी भर्ती वाले जो अफसर कलेक्टर बनने के लिए अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं वे रितु राज,अर्पित वर्मा, बाला गुरू के., गुंचा सनोबर है। बैच में चार प्रमोटी अफसर हैं। राखी सहाय,संजय कुमार जैन, शीला दाहिमा और विदिशा मुखर्जी। राखी सहाय का नाम बारी से पहले कलेक्टर बनाने के लिए था। लेकिन, मुख्य सचिव ने प्रस्ताव टर्न डाउन कर दिया।

नीरज मंडलोई किसी एक विभाग में लंबे समय तक काम नहीं कर पाते हैं। किसी न किसी कारण से उनका विभाग बदल ही जाता है। डॉ. मोहन यादव की सरकार में भी उनका विभाग पहले भी बदला था। अनुराग जैन ने प्रशासनिक फेरबदल से पहले हर अधिकारी की क्षमता का आकलन भी अपने स्तर ही किया । अफसरों के बारे में महत्वपूर्ण फीडबैक उपलब्ध कराने में एन सेल्वेन्द्रम की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जा रही है। अनुराग जैन के आने से पहले तक हर छोटे-बड़े तबादले का फैसला अपर मुख्य सचिव राजेश राजौरा करते थे। लेकिन,अब उनके हाथ में यह काम नहीं है। राजौरा की कार्यशैली भी अलग है। पन्ना जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी संघ प्रिय 2018 बैच के अफसर हैं। उनकी पत्नी सौम्या आनंद 2021 बैच की अफसर हैं। कॉडर चेंज कराकर मध्यप्रदेश आई हैं। विभाग का प्रस्ताव था कि उन्हें पन्ना में ही सहायक कलेक्टर बनाया जाए। लेकिन, राजौरा ने उन्हें पन्ना से दूर शहडोल भेजने के आदेश दिला दिए। इस कारण पति-पत्नी एक स्थान पर नहीं रह सके। जबकि सरकार की नीति भी है।

बच्चों को ऊर्जा बचत की सीख और संस्कार बचपन से ही दें: मंगुभाई पटेल

सुभाष भवन में प्रतिभागियों को प्रदान किए पुरस्कार

भोपाल। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि ऊर्जा की बचत ही ऊर्जा का उत्पादन है। इसलिए जरूरी है कि बच्चों को ऊर्जा बचत की सीख और संस्कार बचपन से ही दिया जाए। उन्हें ऊर्जा की भावी ज़रूरतों और महत्व के प्रति जागरूक बनाएं। राज्यपाल श्री पटेल ऊर्जा संरक्षण पर आधारित, राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता के पुरस्कार समारोह को संबोधित कर रहे थे। समारोह, भारत सरकार के विद्युत मंत्रालय के तत्वाधान में भोपाल के सुभाष भवन में आयोजित किया गया था।

राज्यपाल श्री पटेल ने दो श्रेणियों में आयोजित, राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता के प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए। उन्होंने विजेता प्रतिभागियों को राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता में चयन के लिए बधाई और शुभकामनाएं भी दीं। श्री पटेल ने इस अवसर पर प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल के सदस्यों का भी सम्मान किया। उन्होंने एनएचडीसी को विगत 19 वर्षों से उर्जा संरक्षण की जागरूकता के लिए प्रतियोगिता के सतत् आयोजन की बधाई दी।

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि बच्चों की कल्पनाशीलता और सृजनशीलता प्रकृति का अनुपम उपहार है। ऊर्जा बचत और संरक्षण पर बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र, उनके अंतर्मन की अभिव्यक्ति है। राज्यपाल श्री पटेल ने उपस्थित जनों से अपील की कि वे चित्रकला प्रदर्शनी का अवलोकन ज़रूर करें और बाल कलाकारों के भावों की अभिव्यक्ति को सराहें। उन्होंने बच्चों से कहा कि ऊर्जा संरक्षण के लिए चित्रों का सृजन करते हुए, ऊर्जा बचत के जो सच्चे भाव आपके अंतर्मन में आए थे, उन भावों को हमेशा जीवंत रखें और उनका आजीवन अनुसरण करने का प्रयास करें।

दूल्हा घोड़ी नहीं चढ़ेगा, ढोल भी नहीं बजेगा

इंदौर में वीगन शादी, दावत में दूध-दही, पनीर के आयटम नहीं ; मैन्यू में स्पेशल कढ़ी, परवल की मिठाई

भोपाल। इंदौर का शाह परिवार दूसरी बार वीगन शादी करने जा रहा है। 18 नवंबर को रिटायर्ड बैंककर्मी गिरीश शाह की छोटी बेटी क्षमा की शादी है। इसमें मेहमानों को डेयरी प्रोडक्ट्स से बनी डिश नहीं परोसी जाएंगी, जो भी डिश बनेगी वह वीगन रहेगी। इस वीगन शादी में न तो ढोल बजेगा, न ही दूल्हा घोड़ी चढ़कर अपनी दुल्हनिया को लेने जाएगा बल्कि गाड़ी का

इस्तेमाल करेगा। परिवार ने शादी का निमंत्रण कार्ड भी नहीं छपवाया है। मेहमानों को डिजिटल निमंत्रण दिया है। शाह परिवार ने शादी में आने वाले मेहमानों से अपील की है कि वे लेदर का बेल्ट पहनकर न आए। ऊन या सिल्क की बजाय कॉटन के कपड़े पहनकर आने की अपील की गई है। प्रदेश में जैन समाज की ये चौथी वीगन शादी होगी। गिरीश शाह बताते हैं- हम लोग जैन समुदाय से आते हैं तो हमें लगता था कि हम शाकाहार का पालन कर रहे हैं।

एमपी में 9 डिग्री से नीचे पारा

हिल स्टेशन पचमढ़ी में टेम्प्रेचर 8.8 डिग्री, उत्तरी हवाओं से बढ़ेगी सर्दी

भोपाल। प्रदेश में ठंड का असर बढ़ने लगा है। सीजन में पहली बार पचमढ़ी में पारा 9 डिग्री से नीचे पहुंच गया है। वहीं, प्रदेश के कई शहरों में रात का टेम्परेचर 1 डिग्री तक लुढ़का है। 15 नवंबर के बाद असर और बढ़ेगा। उत्तरी हवाओं से सर्दी बढ़ सकता है। प्रदेश के इकलौते हिल स्टेशन पचमढ़ी में दिन-रात दोनों ही सबसे ठंडे हैं। बुधवार-गुरुवार की रात में भी पचमढ़ी में टेम्प्रेचर 8.8 डिग्री सेल्सियस रहा। एक रात में 1 डिग्री की गिरावट हुई। मौसम वैज्ञानिक शिल्पा आप्टे ने बताया कि अभी मौसम शुष्क है। ज्यादातर शहरों में दिन का तापमान एवरेज 15-16 डिग्री और दिन में 31-32 डिग्री तक ही रहेगा। उन्होंने कहा- पचमढ़ी, मंडला में टेम्प्रेचर लुढ़क सकता है। हिमालय की तरफ वेस्टर्न डिस्टबेंस की एक्टिविटी है। 14 नवंबर तक इसका मूवमेंट हो सकता है। यदि असर रहता है तो उत्तरी हवाएं प्रदेश में आने लगेगी। जिससे ठंड का असर थोड़ा बढ़ सकता है।

नवंबर में सामान्य से नीचे नहीं जाएगा पारा

सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. वेदप्रकाश सिंह ने बताया, वर्तमान में प्रशांत महासागर में अलनीनो-ला नीनो की स्थिति न्यूट्रल है। वहीं, आईओडी भी हिंद महासागर में न्यूट्रल है। इस वजह से नवंबर के शुरुआती दिनों में तापमान का असर ज्यादा नहीं है। दिसंबर में पारा लुढ़कने लगेगा। आखिरी सप्ताह में कोल्ड वेव भी चलेगी। प्रदेश में अभी पचमढ़ी के साथ मंडला, शहडोल और अमरकंटक की रात भी सबसे सर्द है। मौसम विभाग के अनुसार, मंगलवार-बुधवार की रात में पचमढ़ी में पारा सबसे कम 9.6 डिग्री रहा। मंडला में 12 डिग्री, शहडोल-अमरकंटक में 12.7 डिग्री, शाजापुर में 12.8 डिग्री, बैतूल में 13.4 डिग्री, राजगढ़-सीधी में 14 डिग्री, उमरिया में 14.1 डिग्री, मलाजखंड में 14.2 डिग्री और छिंदवाड़ा में 14.4 डिग्री रहा। जबलपुर समेत 15 शहरों में पारा 15 डिग्री से कम रहा। बड़े शहरों की बात करें तो जबलपुर सबसे ठंडा रहा। यहां न्यूनतम तापमान 14.5 डिग्री दर्ज किया गया। भोपाल में 15.5 डिग्री, इंदौर में 16.8 डिग्री, ग्वालियर में 16 डिग्री और उज्जैन में तापमान 16.2 डिग्री दर्ज किया गया। यहां दिन में भी हल्की सर्दी रही।

चलती बाइक पर सब इंस्पेक्टर को आया हार्ट अटैक, मौत

रायसेन में पेट्रोल डलवाकर निकल रहे थे, अचानक गिरे, फिर नहीं उठे

भोपाल। मध्यप्रदेश के रायसेन में एक सब इंस्पेक्टर को बाइक चलाते समय हार्ट अटैक आ गया। जिससे उनकी मौत हो गई। इस घटना का वीडियो भी सामने आया है। घटना रायसेन के बरेली की है। सब इंस्पेक्टर का नाम सुभाष सिंह (उम्र 62 साल) है। वह बरेली में पदस्थ थे। गुरुवार को दोपहर में वे बरेली के पास पेट्रोल पंप से पेट्रोल भरवाकर जा रहे थे। वीडियो में दिख रहा है कि सब इंस्पेक्टर सुभाष सिंह बाइक में पेट्रोल डलवाकर पेट्रोल पंप से निकल रहे है। वह कुछ ही दूरी पर जाते है। तभी बाइक को साइड में लगाने की कोशिश करते हैं। इसी दौरान नीचे गिर पड़ते हैं। यह देख पेट्रोल पंप के कर्मचारी और आसपास मौजूद लोग वहां पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। जिसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस उन्हें बरेली के अस्पताल ले गई। यहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। सब इंस्पेक्टर सुभाष सिंह के गिरते ही राहगीर रुककर उनको देखने लगे। वहां भीड़ जमा हो गई। वे करीब सवा दो मिनट तक सड़क पर ही पड़े रहे। फिर पेट्रोल पंप कर्मियों की सूचना के बाद पुलिस की पेट्रोलिंग गाड़ी पहुंची। एसआई को उठाकर पेट्रोलिंग गाड़ी में लेटाया गया। इसके बाद भी गाड़ी करीब पौने दो मिनट तक यहीं खड़ी रही। यानी एसआई को बचाने के प्रयास के करीब चार मिनट घटनास्थल पर यूं ही गुजर गए। डॉ हेमंत यादव सीबीएमओ बरेली ने बताया कि प्रथम दृष्टया ये मौत सडन अटैक की वजह से हुई है। उन्हें जब हॉस्पिटल लाया गया, तब उनकी पल्स काउंट नहीं हो रही थी। इस पर 30 मिनट का प्रोसेस फॉलो करने के बाद उन्हें डेड डिक्लेयर कर दिया गया। बता दें कि सब इंस्पेक्टर दो महीने बाद रिटायर होने वाले थे। वह उत्तर प्रदेश के बनारस के रहने वाले थे। उनका एक बेटा और एक बेटी है। दोनों की शादी हो चुकी है। एसआई का अंतिम संस्कार यूपी के पैतृक गांव में होगा। परिवार उनकी बॉडी लेकर वहां रवाना हो गया है। साइलेंट हार्ट अटैक को साइलेंट मायोकार्डियल इन्फ्रेक्शन कहा जाता है। इसमें हार्ट अटैक आने पर सीने में दर्द महसूस नहीं होता। हालांकि, कुछ दूसरे सिंप्टम्स महसूस होते हैं। कई बार ब्रेन तक दर्द का एहसास पहुंचाने वाली नस या स्पाइनल कॉर्ड में समस्या की वजह से या फिर साइकोलॉजिकल कारणों से व्यक्ति दर्द की पहचान नहीं कर पाता। इसके अलावा ज्यादा उम्र वाले या डायबिटीज के पेशेंट में ऑटोनॉमिक न्यूरोपेथी के कारण भी दर्द का एहसास नहीं होता है।

मिलर्स को करेंगे प्रोत्साहित, गुणवत्ता में कोई समझौता नहीं

खाद्य मंत्री राजपूत ने प्रस्तावित मिलर्स नीति के संबंध में मिलर्स से की चर्चा

भोपाल। अच्छी एवं समय पर मिलिंग करने वाले मिलर्स को प्रोत्साहित किया जायेगा, साथ ही गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं किया जायेगा। गुणवत्ता के लिये जहां जरूरी होगा, वहां सख्ती भी की जायेगी। मिलर्स नीति के संबंध में आपके द्वारा दिये गये सुझावों पर सकारात्मक रूप से विचार करेंगे। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविन्द सिंह राजपूत ने यह बात खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 की प्रस्तावित मिलिंग नीति के संबंध में मिलर्स से चर्चा के दौरान कही। मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि मिलर्स की सुविधा के लिये वेयर हाउस, नॉन एवं खाद्य संचालनालय में नोडल अधिकारी बनाये जायेंगे। हमारी पूरी टीम आपका पूरा सहयोग करेगी। मिलर्स साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दें। खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि इस वर्ष उपार्जन का

कार्य नोडल एजेंसी नागरिक आपूर्ति निगम के साथ-साथ एनसीसीएफ एवं केन्द्रीय भण्डारण के द्वारा भी किया जाएगा। किसानों की सुविधा एवं अन्य समस्याओं के निराकरण के लिए तथा समन्वय के लिए मिलिंग नीति 2024-25 का प्रारूप खाद्य आयुक्त के देखरेख में तैयार किया जाएगा। इसके अलावा खाद्य आयुक्त समय सीमा में मिलिंग कार्य कराने की समस्त कार्रवाई अपनी निगरानी में पूर्ण करायेगें।

उपार्जन केन्द्र में रखा जायेगा मॉयश्चर मीटर

खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि उपार्जन केन्द्रों में धान की नमी चेक करने के लिये मॉयश्चर मीटर रखा जायेगा। नमी चेक करने के बाद ही एफएक्यू के आधार पर धान की खरीदी की जायेगी। उन्होंने कहा कि मिलर्स उपार्जन केन्द्र से सीधे धान उठायें। इससे परिवहन एवं भण्डारण व्यय में कमी आयेगी। मिलर्स के लंबित भुगतान एवं अपग्रेडेशन राशि के संबंध में जल्द काईवाई की जायेगी। बैठक में खाद्य आयुक्त श्री सिबी चक्रवर्ती ने बताया कि इस वर्ष गत वर्षो से दोगुनी मात्रा से अधिक मात्रा में चावल का परिदान भारतीय खाद्य निगम को किया जाना है। भारतीय खाद्य निगम को नियत समय सीमा में चावल का परिदान के लिये विभाग के पोर्टल पर पंजीकृत मिलर्स को उनकी मिलिंग क्षमता के अनुसार चावल परिदान की जानकारी दर्ज करनी होगी। इस आधार पर ही मिलर्स के लिये भारतीय खाद्य निगम में चावल परिदान की कार्य योजना तैयार की जाएगी। एमडी नागरिक एवं आपूर्ति निगम पी.एन. यादव ने प्रस्तावित नीति 2024-25 के प्रावधानों के बारे में जानकारी दी। प्रस्तावित नीति के संबंध में मिलर्स ने महत्वपूर्ण सुझाव दिये। इस दौरान प्रमुख सचिव खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण श्रीमती रश्मि अरूण शमी, अन्य अधिकारी तथा मिलर्स एसोसिएशन के प्रतिनिधि उपस्थित थे।